Question What is a Charter in Legal History?

In legal history, a **charter** is a **formal written document issued by a sovereign authority** (such as a king, queen, or government) that grants certain rights, privileges, powers, or status to individuals, corporations, cities, or colonies. It is one of the earliest sources of constitutional and administrative law.

विधिक इतिहास में, **चार्टर** (**Charter)** एक औपचारिक लिखित दस्तावेज होता है, जिसे किसी संप्रभु प्राधिकरण (जैसे राजा, रानी या सरकार) द्वारा जारी किया जाता है। इसके माध्यम से व्यक्तियों, निगमों (कंपनियों), नगरों या उपनिवेशों को कुछ अधिकार, विशेषाधिकार, शक्तियाँ या दर्जा प्रदान किया जाता है। यह संवैधानिक और प्रशासनिक विधि के सबसे प्राचीन स्रोतों में से एक है।

1. Meaning The word *charter* comes from the Latin word **"charta"**, meaning a written paper or document. A charter is: A written grant by the sovereign authority conferring rights, powers, or privileges.

"Charter" शब्द लैटिन शब्द "charta" से आया है, जिसका अर्थ है लिखित कागज या दस्तावेज।

चार्टर (Charter) का अर्थ है: संप्रभु प्राधिकरण द्वारा दिया गया एक लिखित अनुदान, जिसके माध्यम से अधिकार, शक्तियाँ या विशेषाधिकार प्रदान किए जाते हैं।

2. Important Features

1. It is a **formal written document**
2. Issued by the **King, Queen, or State**
3. Grants **legal rights or authority**
4. Has **binding legal effect**

3. Types of Charters in Legal History

(1) Royal Charter

Issued by the King/Queen. Example:

- **Magna Carta (1215)** – Issued by King John of England
    - Limited the powers of the king
    - Protected rights of subjects
    - Foundation of constitutional government

(2) Municipal Charter

Granted to towns or cities giving them local self-government powers.

(3) Colonial Charter Given to trading companies or colonies. Example (Indian Legal History):

- **Charter of 1600** – Granted to East India Company by Queen Elizabeth I
- **Charter Act of 1726** – Established Mayor's Courts in Calcutta, Bombay, and Madras

- **Charter Act of 1833** – Centralized legislative power in India

These charters played a major role in developing the Indian judicial system.

4. Importance in Legal History

- Foundation of **constitutional law**
- Development of **judicial system**
- Beginning of **limited monarchy**
- Growth of **corporate legal personality**
- Basis of colonial administration in India

5. Simple Definition A charter is a formal written document issued by a sovereign authority granting rights, powers, or privileges to a person, corporation, city, or colony. It played an important role in the development of constitutional and legal systems.

विधिक इतिहास में "चार्टर" (Charter) क्या है? **चार्टर** एक औपचारिक लिखित दस्तावेज़ होता है, जिसे किसी सम्राट, राजा, रानी या राज्य द्वारा जारी किया जाता है। इसके माध्यम से किसी व्यक्ति, संस्था, नगर या उपनिवेश को विशेष अधिकार, शक्तियाँ या विशेषाधिकार प्रदान किए जाते हैं।

1. अर्थ "Charter" शब्द लैटिन शब्द **"Charta"** से बना है, जिसका अर्थ है – *लिखित दस्तावेज़*। **परिभाषा**: चार्टर वह औपचारिक लिखित दस्तावेज़ है, जिसके द्वारा संप्रभु सत्ता (राजा/राज्य) किसी व्यक्ति या संस्था को अधिकार और शक्तियाँ प्रदान करती है।

2. प्रमुख विशेषताएँ

1. यह एक **लिखित दस्तावेज़** होता है।
2. इसे **राजा, रानी या सरकार** द्वारा जारी किया जाता है।
3. इसके द्वारा **कानूनी अधिकार और शक्तियाँ** दी जाती हैं।
4. इसका **कानूनी प्रभाव बाध्यकारी** (binding) होता है।

3. विधिक इतिहास में चार्टर के प्रकार

(1) रॉयल चार्टर (Royal Charter) राजा या रानी द्वारा जारी किया जाता है।

उदाहरण: **मैग्ना कार्टा (1215) – इंग्लैंड के राजा जॉन द्वारा जारी**

- राजा की शक्तियों पर नियंत्रण लगाया
- प्रजा के अधिकारों की रक्षा की
- संवैधानिक शासन की नींव रखी

(2) नगरपालिका चार्टर (Municipal Charter) नगरों को स्वशासन (Self-Government) का अधिकार देने के लिए।

(3) औपनिवेशिक चार्टर (Colonial Charter) भारत के विधिक इतिहास में महत्वपूर्ण:

- **1600 का चार्टर** – ईस्ट इंडिया कंपनी को महारानी एलिज़ाबेथ द्वारा दिया गया
- **1726 का चार्टर** – कलकत्ता, बंबई और मद्रास में मेयर कोर्ट की स्थापना
- **1833 का चार्टर अधिनियम** – भारत में विधायी शक्ति का केंद्रीकरण

4. विधिक इतिहास में महत्व

- संवैधानिक कानून की शुरुआत
- न्यायपालिका के विकास में योगदान
- सीमित राजतंत्र की स्थापना
- भारत में आधुनिक न्यायिक प्रणाली की नींव

चार्टर एक औपचारिक लिखित दस्तावेज़ है, जिसे संप्रभु सत्ता द्वारा जारी किया जाता है और जिसके द्वारा अधिकार, शक्तियाँ या विशेषाधिकार प्रदान किए जाते हैं। विधिक इतिहास में इसका महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि इससे संवैधानिक और न्यायिक व्यवस्था का विकास हुआ।

QUESTION First Charter (1661) – क्या था?

First Charter of 1661 वह शाही अधिकार-पत्र (Royal Charter) था, जो Charles II of England द्वारा East India Company को प्रदान किया गया था। यह भारत में कंपनी के प्रशासनिक और न्यायिक अधिकारों को मजबूत करने वाला एक महत्वपूर्ण दस्तावेज था।

मुख्य प्रावधान (Main Features):

1. प्रशासनिक अधिकार (Administrative Powers): कंपनी को अपने अधीन क्षेत्रों में शासन चलाने का अधिकार दिया गया।
2. न्यायिक अधिकार (Judicial Powers): कंपनी को अपने कर्मचारियों और निवासियों के बीच विवादों का निपटारा करने के लिए न्यायालय स्थापित करने का अधिकार मिला।
3. कानून बनाने का अधिकार (Legislative Power): कंपनी अपने क्षेत्रों में नियम और कानून बना सकती थी।
4. दंड देने का अधिकार (Power to Punish): कंपनी को अपराध करने वालों को दंडित करने का अधिकार दिया गया।

महत्व (Importance): यह पहला अवसर था जब East India Company को प्रशासनिक और न्यायिक शक्तियाँ दी गईं।

- इससे कंपनी केवल व्यापारिक संस्था न रहकर एक शासनकारी (governing) संस्था बन गई।
- यह भारत में ब्रिटिश कानूनी और प्रशासनिक व्यवस्था की शुरुआत का महत्वपूर्ण कदम था।

निष्कर्ष: Charter of 1661 ने ईस्ट इंडिया कंपनी को शासन, कानून बनाने और न्याय देने की शक्ति देकर भारत में ब्रिटिश शासन की नींव मजबूत की।

Question When did Queen Elizabeth grant the Charter to the East India Company?

Queen Elizabeth I granted the Charter to the **East India Company on 31 December 1600**. The company was officially named: **“The Governor and Company of Merchants of London Trading into the East Indies.”**

For how long was it granted?

The original Charter was granted for **15 years**.

- It gave the Company **exclusive trading rights (monopoly)** in the East Indies.
- After 15 years, the Charter could be **renewed by the Crown**.
- The monopoly could also be cancelled with **2 years’ notice**, if required.

Important Point for Exams

- 📅 **Date:** 31 December 1600
- 👑 **Granted by:** Queen Elizabeth I
- ⏳ **Duration:** 15 years (renewable)
- 🎯 **Purpose:** Exclusive trade rights in the East Indies

Later, the Company’s powers were gradually expanded through new Charters and Charter Acts (like 1661, 1726, 1833, etc.), which eventually led to British political control over India.

महारानी एलिज़ाबेथ ने ईस्ट इंडिया कंपनी को चार्टर कब दिया और कितने समय के लिए?

महारानी एलिज़ाबेथ प्रथम (Queen Elizabeth I) ने **31 दिसम्बर 1600** को ईस्ट इंडिया कंपनी को चार्टर प्रदान किया। कंपनी का आधिकारिक नाम था: **“द गवर्नर एंड कंपनी ऑफ मर्चेंट्स ऑफ लंदन ट्रेडिंग इंटू द ईस्ट इंडीज”**

चार्टर कितने समय के लिए था? यह चार्टर **15 वर्षों** के लिए दिया गया था।

मुख्य बिंदु:

1. कंपनी को **पूर्वी देशों (East Indies)** में व्यापार करने का **एकाधिकार (Monopoly)** दिया गया।
2. 15 वर्ष बाद इसे **नवीनीकृत (Renew)** किया जा सकता था।
3. यदि आवश्यक हो, तो सरकार **2 वर्ष का नोटिस देकर** इसे समाप्त भी कर सकती थी।

परीक्षा के लिए महत्वपूर्ण तथ्य

- 📅 वर्ष: **31 दिसम्बर 1600**
- 👑 प्रदान करने वाली: **महारानी एलिज़ाबेथ प्रथम**
- ⏳ अवधि: **15 वर्ष** (**नवीकरण योग्य**)
- 🎯 उद्देश्य: पूर्वी देशों में व्यापार का विशेष अधिकार

बाद में 1661, 1726 और 1833 आदि के चार्टरों द्वारा कंपनी की शक्तियाँ बढ़ाई गईं, जिससे भारत में अंग्रेज़ी शासन की नींव पड़ी।

Question who deal with mugal king jahangeer?

The person who dealt with **Mughal King Jahangir** on behalf of the East India Company was:

Sir Thomas Roe

Details:

- 📅 He came to India in **1615**
- 👑 Sent by **King James I of England**
- 🎯 Purpose: To obtain trading privileges from Mughal Emperor **Jahangir**
- 🏛️ He stayed at Jahangir's court until **1619**

What did he achieve?

- He secured permission for the East India Company to establish **factories (trading centres)** in Surat and other places.
- The Company received certain **trading privileges** in the Mughal Empire.
- However, he did not get complete monopoly rights inside India.

Sir Thomas Roe was the English ambassador sent by King James I in 1615 to the court of Mughal Emperor Jahangir to obtain trading privileges for the East India Company.

Question what is the name of first criminal court establish by east India co?

The **first criminal court established by the East India Company in India** was: 👉 **Court of Judicature at Madras (Choultry Court – early form)**

Explanation:

- The East India Company established its earliest judicial system at **Madras (Fort St. George)**.
- Around **1665**, a **Court of Judicature** was set up.
- Before that, local petty criminal matters were handled in **Choultry Courts** by Indian officials under Company supervision.

However, in a more structured and formal sense: 👉 **The first proper criminal court under Company authority was established at Madras.**

Important for Exams (More Accurate Answer)

- 📍 **Place:** Madras (Fort St. George)
- 📅 Period: Mid-17th century (around 1665)
- ⚖️ Function: Tried civil and criminal cases of Company servants and local inhabitants

Later developments:

- **1726 Charter** – Established Mayor's Courts in Madras, Bombay, and Calcutta
- **1774** – Supreme Court at Calcutta

The first criminal court established by the East India Company was the Court of Judicature at Madras in the 17th century. It dealt with civil and criminal matters under Company authority.

Sadar Nizamat Adalat (सदर निज़ामत अदालत) **Sadar Nizamat Adalat** was the **highest criminal court** in British India during the early Company period.

When was it established? It was reorganized in **1772** under the judicial plan of **Warren Hastings**.

Function

- It was the **highest appellate criminal court**.
- It heard appeals from **District Criminal Courts (Faujdari Adalats)**.
- It confirmed **death sentences** awarded by lower courts.
- It supervised criminal justice administration.

Who Presided?

- Initially, it functioned in the name of the **Nawab of Bengal**.
- The real control was exercised by the **East India Company officials**.
- Later, Company judges directly controlled it.

Location

- Initially at **Murshidabad**
- Later shifted to **Calcutta**

Importance

- It was the highest criminal court before the establishment of the High Courts.
- In **1862**, after the Indian High Courts Act 1861, it was abolished and replaced by the **High Court of Calcutta**.

Sadar Nizamat Adalat was the highest criminal court in British India during the East India Company period. It was reorganized in 1772 under Warren Hastings. It heard appeals in criminal cases and confirmed death sentences. It was later abolished in 1862 after the establishment of High Courts.

Sadar Diwani Adalat **Sadar Diwani Adalat** was the **highest civil court** in British India during the East India Company period.

Establishment

- Established in **1772**
- Under the **Judicial Plan of Warren Hastings**
- After the Company got **Diwani rights (1765)** from the Mughal Emperor

Functions

1. It was the **highest appellate civil court**.
2. Heard appeals from **District Diwani Adalats**.
3. Decided cases relating to:
    - Property disputes
    - Revenue matters
    - Civil rights
    - Contracts

Composition

- Initially presided over by the **Governor and Council**.
- Later controlled by **British judges**.

Location Situated at **Calcutta**.

Importance

- It was the highest civil court before the establishment of High Courts.
- Abolished in **1862** after the **Indian High Courts Act, 1861**.
- Its powers were transferred to the **Calcutta High Court**.

Sadar Diwani Adalat was the highest civil court in British India established in 1772 under Warren Hastings' Judicial Plan. It heard appeals in civil and revenue matters from district courts. It was abolished in 1862 after the establishment of the High Courts.

Difference between Sadar Diwani Adalat and Sadar Nizamat Adalat

Basis	**Sadar Diwani Adalat**	**Sadar Nizamat Adalat**
Nature of Cases	Dealt with **Civil cases**	Dealt with **Criminal cases**
Meaning	Diwani = Civil / Revenue matters	Nizamat = Criminal administration

Basis	**Sadar Diwani Adalat**	**Sadar Nizamat Adalat**
Established	1772 (Judicial Plan of Warren Hastings)	1772 (Reorganized under Warren Hastings)
Type of Court	Highest **Civil Appellate Court**	Highest **Criminal Appellate Court**
Appeals From	District Diwani Adalats	District Faujdari Adalats
Matters Handled	Property disputes, revenue, contracts, inheritance	Murder, theft, assault, and other criminal offences
Control	Governor and Council (later British judges)	Nominally under Nawab, but controlled by Company
Location	Calcutta	Initially Murshidabad, later shifted to Calcutta
Abolished	1862 (after High Courts Act 1861)	1862 (after High Courts Act 1861)

Sadar Diwani Adalat was the highest civil court established in 1772 under Warren Hastings. It dealt with civil and revenue matters. Sadar Nizamat Adalat was the highest criminal court dealing with criminal cases and confirmation of death sentences. Both courts were abolished in 1862 after the establishment of the High Courts.

Difference between "Procedure Established by Law" and "Due Process of Law."
This is an important Constitutional Law topic (especially Article 21).

Procedure Established by Law **Meaning:** It means that a person can be deprived of life or personal liberty **according to the procedure prescribed by a validly enacted law**.

If the law is properly passed by the legislature, and the procedure in that law is followed, the court will not question whether the law is fair or reasonable (originally).

Origin:

- JP Borrowed from the **Japanese Constitution**
- Adopted in **Article 21 of the Indian Constitution**

Indian Position (Earlier View):

- **A.K. Gopalan v. State of Madras (1950)**
- Supreme Court held that if there is a law and procedure is followed, Article 21 is satisfied.

Due Process of Law **Meaning:** It means that not only must there be a law, but the law must also be **just, fair, and reasonable**.

Courts can examine:

- Whether the law is fair
- Whether the procedure is reasonable
- Whether it violates fundamental rights

Origin: US United States Constitution (5th & 14th Amendments)

Change in Indian Law In **Maneka Gandhi v. Union of India (1978)**, the Supreme Court expanded Article 21 and held: The procedure must be **"right, just and fair"**, not arbitrary. After this case, India practically adopted the **substantive due process principle**, even though the Constitution uses the words **"procedure established by law."**

भारतीय विधि में परिवर्तन (Change in Indian Law) Maneka Gandhi v. Union of India में, सर्वोच्च न्यायालय ने अनुच्छेद 21 के दायरे का विस्तार करते हुए यह कहा कि:

- विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया **न्यायसंगत** (**right**), **उचित** (**just**) **और निष्पक्ष** (**fair**) होनी चाहिए, न कि मनमानी (arbitrary)। इस निर्णय के बाद, भारत ने व्यवहारिक रूप से **Substantive Due Process** के सिद्धांत को अपना लिया, जबकि संविधान में अब भी "procedure established by law" शब्दों का ही प्रयोग किया गया है।

Substantive Due Process of Law (वस्तुनिष्ठ उचित प्रक्रिया का सिद्धांत) **परिभाषा (Definition):** Substantive Due Process का अर्थ है कि केवल कानून बनाने की प्रक्रिया (procedure) ही सही होना पर्याप्त नहीं है, बल्कि **कानून का विषय-वस्तु (content)** भी न्यायसंगत, तर्कसंगत और उचित होना चाहिए। यदि कोई कानून अपने मूल में ही अन्यायपूर्ण या मनमाना है, तो उसे असंवैधानिक घोषित किया जा सकता है।

Difference Between the Two

Basis	Procedure Established by Law	Due Process of Law
Focus	Procedure only	Fairness of law + procedure
Court's Power	Limited	Wide power of judicial review
Origin	Japan	USA
Indian Case	A.K. Gopalan (1950)	Maneka Gandhi (1978)

"Procedure Established by Law" means a person can be deprived of life or liberty according to a law made by the legislature. "Due Process of Law" means the law must be fair, just, and reasonable. Initially, India followed a narrow interpretation in A.K. Gopalan (1950), but after Maneka Gandhi (1978), the Supreme Court expanded Article 21 and incorporated the principle of due process.

"Procedure Established by Law" और "Due Process of Law" में अंतर यह विषय भारतीय संविधान के **अनुच्छेद 21** से संबंधित है।

विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया (Procedure Established by Law)

अर्थ: किसी व्यक्ति के जीवन या व्यक्तिगत स्वतंत्रता को केवल उसी स्थिति में छीना जा सकता है, जब वह **विधायिका द्वारा बनाए गए कानून के अनुसार निर्धारित प्रक्रिया** के अनुसार हो।

यदि संसद/विधानमंडल ने विधि बना दी है और उसमें दी गई प्रक्रिया का पालन किया गया है, तो प्रारंभिक रूप से न्यायालय यह नहीं देखता था कि वह कानून न्यायसंगत है या नहीं।

स्रोत: JP जापान के संविधान से लिया गया भारतीय संविधान के **अनुच्छेद 21** में प्रयुक्त

प्रारंभिक दृष्टिकोण: **A.K. Gopalan बनाम मद्रास राज्य** (**1950**) सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि यदि विधि है और प्रक्रिया का पालन हुआ है, तो अनुच्छेद 21 का उल्लंघन नहीं है।

विधि का उचित प्रक्रम (**Due Process of Law**) **अर्थ**: किसी व्यक्ति के जीवन या स्वतंत्रता को छीनने वाला कानून केवल विधि द्वारा बनाया गया होना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि वह कानून **न्यायसंगत, उचित और तर्कसंगत** भी होना चाहिए। 👉 न्यायालय यह जाँच सकता है कि:

- क्या कानून उचित है?
- क्या प्रक्रिया न्यायसंगत है?
- क्या यह मौलिक अधिकारों का उल्लंघन करती है?

स्रोत: US अमेरिका के संविधान (5वें और 14वें संशोधन) से

भारत में परिवर्तन **Maneka Gandhi बनाम भारत संघ** (**1978**) में सुप्रीम कोर्ट ने कहा: अनुच्छेद 21 के अंतर्गत प्रक्रिया "न्यायसंगत, उचित और तर्कसंगत" होनी चाहिए, न कि मनमानी। इस निर्णय के बाद भारत ने व्यावहारिक रूप से **Due Process** के सिद्धांत को स्वीकार कर लिया।

दोनों में अंतर

आधार	**विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया**	**विधि का उचित प्रक्रम**
ध्यान	केवल प्रक्रिया पर	कानून + प्रक्रिया की न्यायसंगतता
न्यायालय की शक्ति	सीमित	व्यापक न्यायिक समीक्षा
स्रोत	जापान	अमेरिका
प्रमुख वाद	A.K. Gopalan (1950)	Maneka Gandhi (1978)

"विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया" का अर्थ है कि किसी व्यक्ति की स्वतंत्रता केवल विधायिका द्वारा बनाए गए कानून के अनुसार छीनी जा सकती है। "विधि का उचित प्रक्रम" का अर्थ है कि वह कानून न्यायसंगत, उचित और तर्कसंगत भी होना चाहिए। प्रारंभ में भारत ने संकीर्ण व्याख्या अपनाई, परंतु 1978 के Maneka Gandhi वाद के बाद न्यायालय ने उचित प्रक्रम के सिद्धांत को स्वीकार किया।

Contents of the First Charter (Charter of 1600) The **First Charter** was granted by **Queen Elizabeth I on 31 December 1600** to the East India Company. It laid the foundation of British trade in India.

Main Contents of the Charter of 1600

Incorporation of the Company

- The Charter created a legal body named:
  “The Governor and Company of Merchants of London Trading into the East Indies.”
- It gave the Company a **separate legal personality** (corporate status).

Exclusive Trading Rights (Monopoly)

- The Company was given **exclusive rights to trade** in the East Indies.
- No other English merchant could trade in that region without Company permission.

Duration

- Granted for **15 years**.
- Could be renewed by the Crown.
- Could be cancelled with **2 years’ notice**.

Power to Make Bye-Laws

- The Company could make **rules and regulations** for its internal management.
- Such laws must not be contrary to English law.

Power to Acquire Property

- The Company could **purchase, hold, and dispose of property**.
- It could use a **common seal**.

Right to Sue and Be Sued

- As a corporate body, it could **file cases and be sued** in its own name.

Governance Structure

- Managed by a **Governor and 24 Directors (Committee Members)** elected by shareholders.

Importance

- Marked the beginning of British commercial presence in India.
- Gave the Company legal and corporate authority.
- Later charters expanded its judicial and political powers.

The Charter of 1600 granted by Queen Elizabeth I incorporated the East India Company, gave it exclusive trading rights in the East Indies for 15 years, allowed it to make bye-laws, acquire property, and sue or be sued. It laid the foundation of British rule in India.

प्रथम चार्टर (1600) की विषय-वस्तु **31 दिसम्बर 1600** को महारानी एलिज़ाबेथ प्रथम ने ईस्ट इंडिया कंपनी को पहला चार्टर प्रदान किया। यह चार्टर भारत में अंग्रेज़ी व्यापार की शुरुआत का आधार बना।

प्रथम चार्टर (1600) के मुख्य प्रावधान

कंपनी का निगमकरण (Incorporation)

- इस चार्टर द्वारा एक विधिक संस्था की स्थापना की गई जिसका नाम था:
  "द गवर्नर एंड कंपनी ऑफ मर्चेंट्स ऑफ लंदन ट्रेडिंग इंटू द ईस्ट इंडीज"
- कंपनी को **निगम (Corporate Body)** का दर्जा मिला।
- उसे पृथक विधिक व्यक्तित्व (Separate Legal Entity) प्राप्त हुआ।

व्यापार का एकाधिकार (Monopoly)

- कंपनी को **पूर्वी देशों (East Indies)** में व्यापार करने का विशेष और एकमात्र अधिकार दिया गया।
- कोई अन्य अंग्रेज़ व्यापारी बिना अनुमति व्यापार नहीं कर सकता था।

अवधि (Duration)

- चार्टर **15 वर्षों** के लिए प्रदान किया गया।
- इसे बाद में नवीनीकृत किया जा सकता था।
- सरकार 2 वर्ष का नोटिस देकर इसे समाप्त कर सकती थी।

उपविधियाँ बनाने की शक्ति (Power to Make Bye-Laws)

- कंपनी को अपने प्रशासन के लिए **नियम एवं उपनियम** बनाने की शक्ति दी गई।
- ये नियम अंग्रेज़ी कानून के विरुद्ध नहीं होने चाहिए थे।

संपत्ति रखने का अधिकार

- कंपनी को संपत्ति खरीदने, रखने और बेचने का अधिकार दिया गया।
- उसे **कॉमन सील (Common Seal)** रखने की अनुमति थी।

वाद दायर करने की शक्ति

- कंपनी अपने नाम से **वाद दायर कर सकती थी** और उसके विरुद्ध भी वाद चलाया जा सकता था।

प्रबंधन व्यवस्था

- कंपनी का संचालन एक **गवर्नर और 24 निदेशकों (Directors)** द्वारा किया जाना था, जिन्हें शेयरधारक चुनते थे।

महत्व

- यह चार्टर भारत में अंग्रेज़ी शासन की नींव बना।

- इससे कंपनी को कानूनी और कॉर्पोरेट अधिकार प्राप्त हुए।
- आगे के चार्टर (1661, 1726 आदि) ने इसकी शक्तियों को और बढ़ाया।

1600 के चार्टर द्वारा ईस्ट इंडिया कंपनी को निगम का दर्जा, पूर्वी देशों में व्यापार का एकाधिकार, उपविधि बनाने की शक्ति, संपत्ति रखने और वाद दायर करने का अधिकार प्रदान किया गया। यह भारत में ब्रिटिश शासन की शुरुआत का आधार बना।

1600 के चार्टर में गवर्नर, निदेशक एवं न्यायालय व्यवस्था

गवर्नर (Governor)

- 1600 के चार्टर के अनुसार कंपनी का प्रमुख एक **गवर्नर** होता था।
- गवर्नर का चुनाव **कंपनी के शेयरधारकों (General Court)** द्वारा किया जाता था।
- कार्यकाल सामान्यतः **एक वर्ष** का होता था (पुनः चुना जा सकता था)।
- गवर्नर कंपनी के प्रशासन, व्यापारिक निर्णयों और बैठकों की अध्यक्षता करता था।

निदेशक (Directors)

- गवर्नर के साथ **24 निदेशक (जिन्हें "Committee of 24" कहा जाता था)** होते थे।
- इनका भी चुनाव शेयरधारकों द्वारा किया जाता था।
- ये मिलकर कंपनी की नीतियाँ, व्यापारिक योजनाएँ और प्रशासनिक निर्णय तय करते थे।
- गवर्नर + 24 निदेशक मिलकर कंपनी का संचालन करते थे।

न्यायालय व्यवस्था (Courts Established) **महत्वपूर्ण बात**: 1600 के मूल चार्टर में भारत में कोई औपचारिक न्यायालय स्थापित नहीं किया गया था। लेकिन:

- कंपनी को अपने कर्मचारियों और व्यापार से संबंधित मामलों के लिए **उपनियम (Bye-laws)** बनाने की शक्ति दी गई थी। बाद के चार्टरों में न्यायिक शक्तियाँ बढ़ीं।

आगे का विकास:

- **1661 का चार्टर** – कंपनी को दीवानी और फौजदारी मामलों का निर्णय करने की शक्ति मिली।
- **मद्रास में चाउल्ट्री कोर्ट (Choultry Court)** – प्रारंभिक स्थानीय न्यायालय।
- **1726 का चार्टर** – मद्रास, बंबई और कलकत्ता में **मेयर कोर्ट (Mayor's Court)** की स्थापना।

1600 के चार्टर के अनुसार कंपनी का संचालन एक गवर्नर और 24 निदेशकों द्वारा किया जाता था, जिनका चुनाव शेयरधारकों द्वारा होता था। गवर्नर का कार्यकाल सामान्यतः एक वर्ष का होता था। प्रारंभिक चार्टर में कोई

औपचारिक न्यायालय स्थापित नहीं किया गया था, परंतु कंपनी को उपविधियाँ बनाने की शक्ति दी गई थी। बाद के चार्टरों में कंपनी को न्यायिक शक्तियाँ प्रदान की गईं।

===========****************=================***************=================

Veto (often misspelled as *vito*) means **the power to reject or prohibit a decision or proposal**, especially by a constitutional authority.

Simple Meaning: A **veto** is the authority of a person (usually the President or Governor) to refuse approval of a bill passed by the legislature.

Example in Indian Context: Under the Constitution of India, the **President of India** has the power to veto certain bills passed by Parliament.

There are mainly three types of veto in India:

1. **Absolute Veto** – The President completely rejects the bill.
2. **Suspensive Veto** – The President sends the bill back for reconsideration.
3. **Pocket Veto** – The President keeps the bill pending without any action.

Origin: The word *veto* comes from Latin, meaning **"I forbid."**

*********===========************=================**************===========

date 17.02.2026 time 10.30 am period 02

Legislative Power of the East India Company (1600) Establishment (1600)

The East India Company was established by a **Royal Charter** granted by Queen Elizabeth I on **31 December 1600**. Initially, it was only a **trading company**, not a governing body.

Nature of Power in 1600 At the time of the 1600 Charter:

- The Company had **commercial powers**, not full legislative power.
- It could make **by-laws and regulations** for:
    - Its employees
    - Company servants
    - Internal management

👉 These rules were mainly for maintaining discipline and regulating trade.

No Sovereign Legislative Power

- In 1600, the Company **did not have territorial control in India**.
- Therefore, it had **no power to make laws for Indian people**.
- It could only regulate its own members under the authority of the English Crown.

Development Later Real legislative authority developed much later through:

- Regulating Act

- Pitt's India Act
- Charter Act

These Acts gradually converted the Company from a trading body into a governing authority.

In 1600, the East India Company did not possess sovereign legislative power. It only had authority under the Royal Charter to frame internal regulations for its employees and commercial operations. Full legislative powers in India were conferred much later through Parliamentary Acts of the British Government.

WHAT IS REGULATING ACT? Regulating Act (नियामक अधिनियम) क्या है?

Regulating Act ब्रिटिश संसद द्वारा पारित वह अधिनियम था, जिसका उद्देश्य भारत में East India Company के शासन को नियंत्रित (regulate) करना था। यह भारत में ब्रिटिश शासन पर संसदीय नियंत्रण की शुरुआत माना जाता है। **मुख्य रूप से यह Regulating Act (1773) को संदर्भित करता है।**

मुख्य विशेषताएँ:

1. बंगाल के गवर्नर को **गवर्नर-जनरल ऑफ बंगाल** बनाया गया।
    - पहले गवर्नर-जनरल: Warren Hastings
2. गवर्नर-जनरल की सहायता के लिए 4 सदस्यीय परिषद बनाई गई।
3. Supreme Court of Calcutta की स्थापना (1774) की गई।
4. मद्रास और बॉम्बे की प्रेसिडेंसियों को बंगाल के अधीन किया गया (कुछ हद तक)।
5. कंपनी के अधिकारियों पर भ्रष्टाचार रोकने के लिए नियंत्रण लगाए गए।

महत्व:

- यह भारत में ब्रिटिश शासन को नियंत्रित करने वाला पहला महत्वपूर्ण कानून था।
- इससे ब्रिटिश संसद का भारत के प्रशासन पर नियंत्रण शुरू हुआ।

Regulating Act, 1773 भारत के संवैधानिक विकास की दिशा में पहला महत्वपूर्ण कदम था, जिसने ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन को व्यवस्थित और नियंत्रित किया।

Pitt's Act क्या है?

Pitt's Act से आशय Pitt's India Act (1784) से है, जिसे ब्रिटिश प्रधानमंत्री William Pitt the Younger के नाम पर जाना जाता है। इसका उद्देश्य भारत में East India Company के प्रशासन पर ब्रिटिश सरकार का अधिक नियंत्रण स्थापित करना था।

मुख्य विशेषताएँ:

1. **द्वैध शासन (Dual System) की स्थापना**
   - कंपनी और ब्रिटिश सरकार दोनों मिलकर भारत का शासन चलाएँगे।
2. **Board of Control की स्थापना**
   - यह बोर्ड ब्रिटिश सरकार का प्रतिनिधित्व करता था और कंपनी के राजनीतिक कार्यों पर नियंत्रण रखता था।
3. **Court of Directors की भूमिका सीमित**
   - कंपनी के व्यापारिक कार्य Court of Directors के पास रहे, लेकिन राजनीतिक मामलों में सरकार का नियंत्रण बढ़ गया।
4. **भारत के प्रशासन पर सरकारी नियंत्रण**
   - भारत में होने वाले सभी महत्वपूर्ण निर्णयों पर ब्रिटिश सरकार की निगरानी सुनिश्चित की गई।

महत्व:

- इस अधिनियम ने कंपनी के शासन को ब्रिटिश सरकार के अधीन ला दिया।
- भारत में **केंद्रीयकृत प्रशासन** की नींव मजबूत हुई।

निष्कर्ष: **Pitt's Act, 1784** ने Regulating Act की कमियों को दूर करते हुए भारत में ब्रिटिश सरकार के नियंत्रण को सुदृढ़ किया और कंपनी के शासन को प्रभावी रूप से नियंत्रित किया।

Charter Act (चार्टर अधिनियम) क्या है?

Charter Act वे अधिनियम थे, जिन्हें ब्रिटिश संसद द्वारा समय-समय पर पारित किया गया, ताकि भारत में East India Company के अधिकारों, शक्तियों और प्रशासन को नियंत्रित तथा नवीनीकृत (renew) किया जा सके। ये अधिनियम कंपनी को भारत में शासन और व्यापार करने का **चार्टर (अधिकार-पत्र)** प्रदान करते थे।

प्रमुख Charter Acts:

1. **Charter Act (1813)**
   - कंपनी का व्यापारिक एकाधिकार समाप्त (चाय और चीन को छोड़कर)।
   - भारत में ईसाई मिशनरियों को आने की अनुमति।
2. **Charter Act (1833)**
   - कंपनी का व्यापार पूरी तरह समाप्त।
   - गवर्नर-जनरल ऑफ बंगाल को **गवर्नर-जनरल ऑफ इंडिया** बनाया गया।

  - पहले गवर्नर-जनरल: Lord William Bentinck

3. **Charter Act (1853)**
    - सिविल सेवाओं में प्रतियोगी परीक्षा (Competitive Exam) की शुरुआत।
    - विधान परिषद का विस्तार।

महत्व:

- इन अधिनियमों ने भारत में ब्रिटिश प्रशासन को क्रमिक रूप से विकसित किया।
- कंपनी के व्यापारिक स्वरूप को समाप्त कर उसे एक प्रशासनिक संस्था में बदल दिया।
- आधुनिक प्रशासन और सिविल सेवा प्रणाली की नींव रखी।

निष्कर्ष: **Charter Acts** भारत के संवैधानिक विकास में महत्वपूर्ण मील के पत्थर हैं, जिन्होंने East India Company के शासन को नियंत्रित, सीमित और अंततः समाप्त करने की दिशा में मार्ग प्रशस्त किया।

1600 में ईस्ट इंडिया कंपनी की विधायी शक्ति **स्थापना (1600)** East India Company की स्थापना 31 दिसम्बर 1600 को Queen Elizabeth I द्वारा दिए गए **रॉयल चार्टर (Royal Charter)** के माध्यम से हुई थी। उस समय यह केवल एक **व्यापारिक कंपनी (Trading Company)** थी।

1600 में विधायी शक्ति की स्थिति 1600 के चार्टर के अंतर्गत कंपनी को:

- अपने कर्मचारियों और सदस्यों के लिए
- व्यापार संचालन और अनुशासन बनाए रखने हेतु

नियम और उपविधियाँ (By-laws) बनाने का अधिकार था। 👉 ये नियम केवल कंपनी के आंतरिक प्रबंधन (Internal Management) तक सीमित थे।

संप्रभु (Sovereign) विधायी शक्ति का अभाव

- 1600 में कंपनी के पास भारत में कोई क्षेत्रीय शासन (Territorial Control) नहीं था।
- इसलिए उसे भारतीय जनता के लिए कानून बनाने की संप्रभु शक्ति प्राप्त नहीं थी।
- वह केवल इंग्लैंड के सम्राट के अधिकार के अधीन अपने व्यापार से संबंधित नियम बना सकती थी।

बाद में विधायी शक्ति का विकास समय के साथ कंपनी को विधायी शक्तियाँ ब्रिटिश संसद के अधिनियमों द्वारा प्राप्त हुईं, जैसे:

- Regulating Act
- Pitt's India Act
- Charter Act

इन अधिनियमों के माध्यम से कंपनी एक व्यापारिक संस्था से शासकीय संस्था में परिवर्तित हो गई। 1600 में ईस्ट इंडिया कंपनी के पास संप्रभु विधायी शक्ति नहीं थी। उसे केवल अपने कर्मचारियों और व्यापारिक कार्यों के संचालन हेतु आंतरिक नियम बनाने का अधिकार प्राप्त था। वास्तविक विधायी शक्ति उसे बाद में ब्रिटिश संसद के अधिनियमों द्वारा प्रदान की गई।

**************=================**************===============****************

date 18.02.2026 time 10.30 am period 2

Charter of 1661 The **English East India Company** received the **Charter of 1661** from **Charles II**.
This Charter greatly expanded the Company's powers in India.

Appointment of Governor and Officers

- The Company was empowered to appoint a **Governor** and other officers for its factories and settlements.
- The Governor was given authority to administer the settlement and maintain discipline.

Power to Make Laws

- The Company could make laws, orders, and ordinances for governance of its settlements.
- Such laws had to be reasonable and not contrary to the laws of England.

Judicial Powers

- The Governor and Council were authorized to try civil and criminal cases involving Company servants.
- They could impose punishment according to English law.

Power to Wage War and Make Peace

- The Company could declare war and make peace with non-Christian powers in areas where it traded.

Power to Fortify and Defend

- It was allowed to build forts, raise armies, and defend its territories.

गवर्नर एवं अधिकारियों की नियुक्ति

- कंपनी को अपने कारखानों (Factories) और बस्तियों में **गवर्नर** तथा अन्य अधिकारियों की नियुक्ति का अधिकार दिया गया।
- गवर्नर को प्रशासन चलाने और अनुशासन बनाए रखने की शक्ति दी गई।

कानून बनाने की शक्ति

- कंपनी को अपनी बस्तियों के शासन के लिए नियम, आदेश और अधिनियम बनाने की अनुमति दी गई।
- ये नियम इंग्लैंड के कानून के विरुद्ध नहीं होने चाहिए।

न्यायिक शक्तियाँ

- गवर्नर और उसकी परिषद को दीवानी एवं फौजदारी मामलों की सुनवाई का अधिकार दिया गया।
- वे अंग्रेजी कानून के अनुसार दंड दे सकते थे।

युद्ध और शांति की शक्ति

- कंपनी को गैर-ईसाई शासकों के विरुद्ध युद्ध करने और संधि करने का अधिकार दिया गया।

किलेबंदी और सुरक्षा

- कंपनी को किले बनाने, सेना रखने और अपने क्षेत्रों की रक्षा करने का अधिकार मिला।

Importance of Charter 1661

- It marked the beginning of **political and administrative authority** of the East India Company in India.
- It laid the foundation for later judicial and executive developments.
- It strengthened Company's transformation from a trading body to a territorial power.

---

case **Mrs. Ascentia Dawes – Legal History Context**

Mrs. Ascentia Dawes 17वीं शताब्दी में **English East India Company** के अधीन भारत में रहने वाली एक अंग्रेज महिला थीं।

महत्व (Importance)

- उनका नाम प्रारंभिक अंग्रेजी न्यायिक प्रणाली (Early English Judicial System in India) के संदर्भ में आता है।
- उन पर हत्या (murder) का आरोप लगा था।
- उस समय भारत में स्पष्ट और विकसित अंग्रेजी न्यायिक संरचना नहीं थी।
- इस मामले ने यह प्रश्न उठाया कि भारत में अंग्रेज प्रजाजनों पर किस कानून के अनुसार मुकदमा चलाया जाएगा।

कानूनी महत्व

- यह मामला दिखाता है कि 1661 के चार्टर के बाद कंपनी को अपने कर्मचारियों पर न्यायिक अधिकार प्राप्त थे।
- इससे स्पष्ट हुआ कि कंपनी अपने अंग्रेज कर्मचारियों के विरुद्ध आपराधिक मामलों की सुनवाई कर सकती थी।
- इस प्रकार यह मामला भारत में अंग्रेजी आपराधिक न्याय प्रणाली के प्रारंभिक विकास से जुड़ा हुआ है।

Mrs. Ascentia Dawes का मामला भारत में अंग्रेजी न्याय व्यवस्था के प्रारंभिक विकास का उदाहरण है। इसने स्पष्ट किया कि ईस्ट इंडिया कंपनी को अपने कर्मचारियों पर न्यायिक अधिकार प्राप्त था और अंग्रेजों पर अंग्रेजी कानून लागू होगा।

correct Legal Sequence in a Criminal Case

FIR (First Information Report) 👉 Complaint is registered with the police. (प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज होती है)

Investigation 👉 Police collect evidence, record statements. (पुलिस जांच करती है)

Accused 👉 A person against whom allegation is made. (जिस व्यक्ति पर आरोप लगाया गया हो)

Arrest (if required) 👉 Police may arrest the accused. (आरोपी की गिरफ्तारी)

Charge Sheet 👉 Police file report before court after investigation. (जांच के बाद अदालत में आरोप-पत्र दाखिल)

Trial Begins 👉 Court starts hearing the case. (मुकदमे की सुनवाई शुरू)

Charges Framed 👉 Court formally states the charges. (आरोप तय किए जाते हैं)

Prosecution Evidence 👉 Evidence presented against accused. (अभियोजन पक्ष साक्ष्य प्रस्तुत करता है)

Defense Evidence (if any) 👉 Accused presents defense. (बचाव पक्ष साक्ष्य देता है)

Arguments 👉 Final arguments by both sides. (दोनों पक्षों की अंतिम बहस)

Judgment 👉 Court gives decision. (अदालत निर्णय सुनाती है)

If accused is found guilty 👉 **Conviction** (दोषसिद्धि) If not guilty 👉 **Acquittal** (बरी)

Sentence / Order 👉 Court decides punishment after conviction. (दोष सिद्ध होने पर दंडादेश)

Appeal (if filed) 👉 Higher court review. (उच्च न्यायालय में अपील)

Important Terms

- FIR ✅
- Accused ✅
- Culprit (actual offender, informal term)
- Conviction ✅
- Acquittal ✅
- Sentence ✅

- Order ✅

Charter of 1661 – Second Phase (1678–1686) The **English East India Company** received wide powers under the **Charter of 1661** from **Charles II**. However, between **1678–1686**, the Company entered a *second phase* where these powers were expanded and practically enforced, especially in judicial and military matters.

This period marks the transformation of the Company from a **trading body** into a **semi-sovereign political authority**.

Main Features of the Second Phase (1678–1686)

Strengthening of Governor's Authority

- Governors of settlements (especially Madras and Bombay) were given stronger administrative control.
- The Governor and Council became the central authority in civil, criminal, and military matters.

Development of Judicial System

- The Company began establishing more organized courts in its settlements.
- Civil and criminal justice was administered in the name of the Company.
- English law principles were increasingly applied to English subjects.

👉 This laid the foundation for later judicial reforms (like the Charter of 1683 and 1686).

Military and War Powers

- The Company actively exercised its right to wage war and make peace with Indian rulers.
- It maintained armed forces and fortified settlements.

This shows practical use of powers granted in 1661.

Establishment of Admiralty Court (1686) In 1686, an **Admiralty Court** was established in Madras to try maritime and commercial disputes. This marked a major step toward formal judicial administration.

Political Ambition of the Company

During this phase, the Company increasingly behaved like a sovereign authority:

- Entered treaties
- Collected revenue
- Exercised judicial and executive powers

Importance of 1678–1686 Phase

- Transition from trade to territorial power.
- Beginning of structured judicial institutions in India.

- Foundation for later Charters (1683, 1698).

The second phase (1678–1686) of the Charter of 1661 represents the period when the East India Company began actively exercising its political, military, and judicial powers. This phase marks the early beginning of British administrative and judicial control in India.

चार्टर 1661 का द्वितीय चरण (1678–1686) **English East India Company** को **Charles II** द्वारा 1661 का चार्टर प्रदान किया गया था। परंतु **1678 से 1686** के बीच का काल उसका *द्वितीय चरण* माना जाता है, क्योंकि इस अवधि में कंपनी ने चार्टर द्वारा दी गई शक्तियों का **व्यावहारिक और व्यापक प्रयोग** शुरू कर दिया। यही वह समय है जब कंपनी केवल व्यापारिक संस्था न रहकर एक **अर्ध-राजनैतिक (Semi-Sovereign) शक्ति** के रूप में उभरने लगी।

द्वितीय चरण की मुख्य विशेषताएँ (1678–1686)

1️⃣ गवर्नर की शक्ति में वृद्धि

- मद्रास और बंबई जैसे केंद्रों में गवर्नर और उसकी परिषद को अधिक प्रशासनिक अधिकार दिए गए।
- दीवानी, फौजदारी और सैनिक मामलों में गवर्नर सर्वोच्च प्राधिकारी बन गया।

2️⃣ न्यायिक व्यवस्था का विकास

- कंपनी ने अपने क्षेत्रों में नियमित न्यायालय स्थापित करने शुरू किए।
- दीवानी और आपराधिक मामलों की सुनवाई कंपनी के नाम पर होने लगी।
- अंग्रेज प्रजाजनों पर अंग्रेजी कानून के सिद्धांत लागू किए गए।

👉 यही आगे चलकर 1683 और 1686 के चार्टरों के माध्यम से अधिक संगठित न्यायिक व्यवस्था का आधार बना।

3️⃣ युद्ध और सैन्य शक्ति का प्रयोग

- कंपनी ने भारतीय शासकों के साथ युद्ध और संधि करने की शक्ति का उपयोग किया।
- किले बनाए गए और सेना रखी गई।

इससे स्पष्ट हुआ कि कंपनी अब केवल व्यापारी संस्था नहीं रही।

4️⃣ 1686 में एडमिरल्टी कोर्ट की स्थापना

- 1686 में मद्रास में **Admiralty Court** स्थापित किया गया।
- यह समुद्री और व्यापारिक विवादों की सुनवाई करता था।
- यह भारत में अंग्रेजी न्यायिक प्रणाली के औपचारिक विकास की दिशा में महत्वपूर्ण कदम था।

5️⃣ कंपनी की राजनीतिक महत्वाकांक्षा

इस काल में कंपनी ने—

- संधियाँ कीं
- राजस्व वसूला
- प्रशासनिक और न्यायिक अधिकारों का प्रयोग किया

इससे वह धीरे-धीरे एक शासकीय शक्ति बनती गई।

महत्व

- यह चरण व्यापार से शासन की ओर परिवर्तन का प्रारंभ था।
- भारत में अंग्रेजी न्यायिक और प्रशासनिक प्रणाली की नींव इसी समय पड़ी।
- आगे चलकर 1686 और 1698 के चार्टरों के लिए आधार तैयार हुआ।

चार्टर 1661 का द्वितीय चरण (1678–1686) वह अवधि थी जब ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपनी न्यायिक, प्रशासनिक और सैन्य शक्तियों का सक्रिय रूप से प्रयोग किया। इसी काल में कंपनी एक व्यापारिक संस्था से राजनीतिक शक्ति में परिवर्तित होने लगी।

Meaning of Metropolitan City A **Metropolitan City** is a very large and important city that:

- Has a **large population**
- Is a major centre of **business, trade, administration, and culture**
- Includes surrounding urban areas or suburbs
- Has advanced infrastructure like transport, hospitals, courts, universities, etc.

👉 It is usually more developed and more populated than an ordinary city.

Example: In India, cities like **Delhi**, **Mumbai**, **Kolkata**, and **Chennai** are considered metropolitan cities.

Legal Meaning (Indian Law Context) Under the **Code of Criminal Procedure (CrPC), 1973**, a metropolitan area means:

👉 Any area declared by the State Government
👉 Having a population of **10 lakh (1 million) or more**

Such areas have:

- **Metropolitan Magistrates**
- Special criminal court structure

महानगर (Metropolitan City) वह बड़ा शहर होता है—

- जहाँ जनसंख्या बहुत अधिक हो

- जो व्यापार, उद्योग और प्रशासन का प्रमुख केंद्र हो
- जिसके आसपास कई छोटे शहर या उपनगर जुड़े हों

भारत में 10 लाख या उससे अधिक जनसंख्या वाले शहर को कानून के अनुसार महानगर घोषित किया जा सकता है।

Choultry Court (चौल्ट्री कोर्ट) **Choultry Court** was an early judicial institution established by the **English East India Company** in **Madras** (present-day Chennai). It functioned during the 17th century before the establishment of formal British courts in India.

◆ Historical Background

- Established around **1678** in Madras.
- It was one of the earliest courts in British India.
- It worked under the authority of the Governor and Council.

◆ Functions of Choultry Court

1️⃣ Decided **petty civil and criminal cases**
2️⃣ Tried cases involving small disputes
3️⃣ Collected fines and revenue
4️⃣ Maintained local law and order

👉 It mainly dealt with disputes among Indian inhabitants.

◆ Composition (Structure)

- Headed by an Indian official called **Adigar**.
- Assisted by local officers.
- It was not a fully English court; it followed local customs along with Company supervision.

◆ Importance

- It was the **first step in the development of British judicial system in India**.
- Later replaced by more organized courts like the Mayor's Court (1726).
- Shows the transition from traditional Indian justice to English-style courts.

चौल्ट्री कोर्ट मद्रास में ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा स्थापित प्रारंभिक न्यायालय था, जो छोटे दीवानी और फौजदारी मामलों की सुनवाई करता था। यह भारत में अंग्रेजी न्याय प्रणाली की शुरुआत का प्रतीक था।

Who delivers the summons? What is the name of that person?

◆ **In Modern Indian Legal System** Under the **Code of Criminal Procedure, 1973 (CrPC)** and **Civil Procedure Code (CPC)**:

👉 A **Summons** is generally delivered by:

1️⃣ Process Server

- The official court employee who serves summons.
- Works under the court.
- Personally delivers the summons to the accused/defendant.

2️⃣ Police Officer

- In criminal cases, sometimes summons is served by a police officer.

3️⃣ Court Officer / Bailiff

- In civil cases, a **Bailiff** may serve summons.

🔹 In Early Madras (Choultry Court Period)

In the early judicial system of **Madras** under the **English East India Company**, summons were usually delivered by:

- Local officers working under the **Adigar (Adhikari)**
- Village officials
- Company servants assigned for execution of orders

There was no formal “process server” designation at that time.

A summons is delivered by a **Process Server** or **Bailiff** appointed by the court. In criminal cases, it may also be served by a police officer.

⚖ **Jurisdiction – Meaning and Types** **Jurisdiction** means the legal authority or power of a court to hear and decide a case. 👉 In simple words: Jurisdiction means **the power of a court to take up a case and give a decision**.

अधिकार-क्षेत्र (Jurisdiction) का अर्थ है किसी न्यायालय की वह विधिक शक्ति या अधिकार, जिसके द्वारा वह किसी मामले को सुनने और उसका निर्णय करने में सक्षम होता है।

🔹 Types of Jurisdiction

1️⃣ Pecuniary Jurisdiction (Related to Money)

- “Pecuniary” means **related to money value**.
- Courts have authority based on the **financial value of the case**.
- A lower court can hear cases up to a certain monetary limit.
- If the amount exceeds that limit, the case goes to a higher court.

📌 Example: If a civil dispute involves ₹5 lakh, it may go to a lower civil court. If it involves ₹1 crore, it may go to a higher court.

2️⃣ Territorial Jurisdiction (Area-wise Authority)

- A court can hear cases only within its **geographical area**.

- The place where the offence occurred or cause of action arose determines jurisdiction.

📌 Example: If a crime happens in **Delhi**, Delhi courts will have territorial jurisdiction.

3️⃣ Subject-Matter Jurisdiction

- Refers to the **type of case** a court can hear.
- Different courts handle different matters.

📌 Examples:

- Family Court → Marriage and divorce cases
- Criminal Court → Criminal offences
- Civil Court → Property and contract disputes

If a court has no subject-matter jurisdiction, its decision is invalid.

4️⃣ Original Jurisdiction

- When a case is filed in a court **for the first time**, it is called original jurisdiction.
- The court hears evidence and decides the case initially.

📌 Example: The **Supreme Court of India** has original jurisdiction in disputes between states (Article 131).

5️⃣ Appellate Jurisdiction

- When a higher court hears an **appeal** against the decision of a lower court.
- It reviews the lower court's decision.

📌 Example: The **High Court of Delhi** hears appeals from subordinate courts.

Jurisdiction means the legal authority of a court to decide a case. It may be classified into pecuniary (money-based), territorial (area-based), subject-matter (type of case), original (first hearing), and appellate (appeal hearing).

⚖ क्षेत्राधिकार (Jurisdiction) – अर्थ और प्रकार किसी न्यायालय की वह कानूनी शक्ति या अधिकार, जिसके आधार पर वह किसी मामले की सुनवाई कर सके और निर्णय दे सके। **किस न्यायालय को कौन-सा मामला सुनने का अधिकार है, वही उसका क्षेत्राधिकार है।**

🔹 क्षेत्राधिकार के प्रकार

1️⃣ पैक्यूनियरी क्षेत्राधिकार (Pecuniary Jurisdiction) – धन से संबंधित

- "Pecuniary" का अर्थ है **धन या राशि से संबंधित।**
- न्यायालय की शक्ति मामले की **मूल्य राशि (Value of Suit)** पर निर्भर करती है।
- निम्न न्यायालय सीमित धनराशि तक के मामले सुन सकता है।

- अधिक राशि वाले मामले उच्च न्यायालय में जाते हैं।

📌 उदाहरण: यदि विवाद ₹5 लाख का है तो निचली सिविल अदालत में जा सकता है, लेकिन ₹1 करोड़ का मामला उच्च न्यायालय में जा सकता है।

2️⃣ क्षेत्रीय क्षेत्राधिकार (Territorial Jurisdiction)

- न्यायालय केवल अपने **भौगोलिक क्षेत्र** के भीतर हुए मामलों की सुनवाई कर सकता है।
- जहाँ अपराध हुआ या कारण उत्पन्न हुआ, वही क्षेत्रीय अधिकार तय करता है।

📌 उदाहरण: यदि अपराध **Delhi** में हुआ है, तो दिल्ली की अदालत को क्षेत्रीय अधिकार होगा।

3️⃣ विषयगत क्षेत्राधिकार (Subject-Matter Jurisdiction)

- न्यायालय किस प्रकार के मामले सुन सकता है, यह विषयगत क्षेत्राधिकार कहलाता है।
- अलग-अलग न्यायालय अलग प्रकार के मामलों की सुनवाई करते हैं।

📌 उदाहरण: पारिवारिक न्यायालय → विवाह एवं तलाक के मामले

- फौजदारी न्यायालय → अपराध से संबंधित मामले
- दीवानी न्यायालय → संपत्ति एवं अनुबंध विवाद

यदि किसी न्यायालय को विषयगत अधिकार नहीं है, तो उसका निर्णय अमान्य होगा।

4️⃣ मूल क्षेत्राधिकार (Original Jurisdiction)

- जब कोई मामला पहली बार किसी न्यायालय में दायर किया जाता है, तो उसे मूल क्षेत्राधिकार कहते हैं।
- न्यायालय सीधे सुनवाई कर निर्णय देता है।

📌 उदाहरण: **Supreme Court of India** को राज्यों के बीच विवादों में मूल क्षेत्राधिकार प्राप्त है (अनुच्छेद 131)।

5️⃣ अपीलीय क्षेत्राधिकार (Appellate Jurisdiction)

- जब कोई उच्च न्यायालय निचली अदालत के निर्णय के विरुद्ध अपील सुनता है, तो उसे अपीलीय क्षेत्राधिकार कहते हैं।
- इसमें उच्च न्यायालय निर्णय की समीक्षा करता है।

📌 उदाहरण: **High Court of Delhi** अधीनस्थ न्यायालयों के निर्णयों की अपील सुनता है।

क्षेत्राधिकार का अर्थ है न्यायालय की वह कानूनी शक्ति जिसके आधार पर वह किसी मामले की सुनवाई कर सके। यह पैक्यूनियरी (धन आधारित), क्षेत्रीय (भौगोलिक), विषयगत (मामले के प्रकार पर आधारित), मूल (पहली सुनवाई) तथा अपीलीय (अपील की सुनवाई) हो सकता है।

Charter of 1661 – Third Phase (1686 onwards) The **English East India Company** received wide powers under the Charter of 1661 from **Charles II**. The **third phase (from 1686 onward)** marks the period when the Company began exercising **full judicial and political authority** and moved closer to becoming a territorial power.

🔹 Background of Third Phase (1686)

- The Company had strengthened its military power.
- It began asserting political authority against Indian rulers.
- Judicial institutions became more organized.

This period is sometimes connected with the **Charter of 1686**, which further expanded judicial powers.

🔹 Main Features of the Third Phase

1️⃣ Establishment of Admiralty Court (1686)

- An **Admiralty Court** was established in Madras in 1686.
- It dealt with:
  - Maritime disputes
  - Trade matters
  - Commercial cases
- It was presided over by a legally trained judge.

👉 This was a major step toward formal English judicial administration in India.

2️⃣ Stronger Executive and Judicial Control

- The Governor and Council were given wider authority.
- Civil and criminal justice became more systematized.
- English legal principles were increasingly applied.

3️⃣ Beginning of Centralized Administration

- Madras became an important administrative centre.
- The Company began behaving like a sovereign authority:
  - Making treaties
  - Collecting revenue
  - Waging wars

4️⃣ Conflict with Mughal Authority

- Around 1686–1690, the Company entered into conflict with the Mughal Empire.
- This shows the Company's shift from trader to political power.

🔹 Importance of Third Phase

- Transformation from trading corporation to governing authority.
- Beginning of organized British judicial system in India.
- Foundation for later developments like the Mayor's Court (1726).

The third phase of the Charter of 1661 (from 1686 onward) represents the period when the East India Company began exercising full judicial and political powers. With the establishment of the Admiralty Court and stronger executive authority, the Company moved from a trading body to a territorial power, laying the foundation of British administration in India.

चार्टर 1661 का तृतीय चरण (1686 के बाद) **English East India Company** को 1661 में **Charles II** द्वारा व्यापक अधिकार दिए गए थे। **1686 के बाद का काल** चार्टर 1661 का *तृतीय चरण* माना जाता है, क्योंकि इस अवधि में कंपनी ने अपनी न्यायिक, प्रशासनिक और सैन्य शक्तियों का पूर्ण रूप से प्रयोग करना प्रारंभ कर दिया। यह समय कंपनी के **व्यापारी संस्था से शासकीय शक्ति** में परिवर्तन का महत्वपूर्ण चरण था।

🔹 तृतीय चरण की मुख्य विशेषताएँ

1️⃣ 1686 में एडमिरल्टी कोर्ट की स्थापना

- 1686 में मद्रास में **Admiralty Court** की स्थापना की गई।
- यह न्यायालय समुद्री एवं व्यापारिक विवादों की सुनवाई करता था।
- इसमें विधि-विशेषज्ञ (trained judge) की नियुक्ति की गई।

👉 यह भारत में अंग्रेजी न्यायिक प्रणाली के औपचारिक विकास की दिशा में महत्वपूर्ण कदम था।

2️⃣ गवर्नर और परिषद की शक्तियों में वृद्धि

- गवर्नर और उसकी परिषद को व्यापक प्रशासनिक एवं न्यायिक अधिकार दिए गए।
- दीवानी और फौजदारी न्याय अधिक संगठित रूप में संचालित होने लगा।
- अंग्रेजी कानून के सिद्धांतों का अधिक प्रयोग होने लगा।

3️⃣ केंद्रीकृत प्रशासन की शुरुआत

- मद्रास एक प्रमुख प्रशासनिक केंद्र के रूप में विकसित हुआ।
- कंपनी ने संधियाँ कीं, राजस्व वसूला और युद्ध किए।
- कंपनी का व्यवहार एक स्वतंत्र शासक जैसा होने लगा।

4️⃣ मुगल सत्ता से टकराव (1686–1690)

- इस काल में कंपनी का मुगल साम्राज्य से संघर्ष हुआ।

- इससे स्पष्ट हुआ कि कंपनी अब केवल व्यापारी संस्था नहीं रही, बल्कि राजनीतिक शक्ति बन गई थी।

◆ महत्व

- यह चरण ब्रिटिश न्यायिक प्रणाली की मजबूत नींव का प्रारंभ था।
- कंपनी का रूपांतरण व्यापारिक संस्था से शासनकारी शक्ति में हुआ।
- आगे चलकर 1726 के मेयर्स कोर्ट जैसे सुधारों का मार्ग प्रशस्त हुआ।

चार्टर 1661 का तृतीय चरण (1686 के बाद) वह समय था जब ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपनी न्यायिक और प्रशासनिक शक्तियों का पूर्ण प्रयोग प्रारंभ किया। एडमिरल्टी कोर्ट की स्थापना और केंद्रीकृत प्रशासन के विकास के साथ कंपनी एक व्यापारिक संस्था से राजनीतिक शक्ति में परिवर्तित हो गई।

चार्टर 1661 के तीनों चरणों की तुलना तालिका चार्टर 1661, जो **Charles II** द्वारा **English East India Company** को दिया गया था, ने कंपनी को प्रशासनिक और न्यायिक अधिकार प्रदान किए। नीचे तीनों चरणों की तुलना दी गई है:

◆ तुलना तालिका

आधार	**प्रथम चरण (1661–1677)**	**द्वितीय चरण (1678–1686)**	**तृतीय चरण (1686 के बाद)**
प्रकृति	प्रारंभिक न्यायिक अधिकार	न्यायिक संरचना में सुधार	पूर्ण प्रशासनिक व न्यायिक नियंत्रण
न्यायिक व्यवस्था	गवर्नर और परिषद द्वारा न्याय	न्यायालय अधिक संगठित हुए	1686 में एडमिरल्टी कोर्ट की स्थापना
कानून का प्रयोग	अंग्रेजी कानून का सीमित प्रयोग	अंग्रेजी सिद्धांतों का बढ़ता प्रयोग	अंग्रेजी विधि का व्यवस्थित प्रयोग
सत्ता का स्वरूप	व्यापारिक संस्था	अर्ध-राजनीतिक शक्ति	शासकीय/राजनीतिक शक्ति
मुख्य विशेषता	दीवानी व फौजदारी मामलों की सुनवाई की अनुमति	न्यायिक प्रणाली में सुधार	समुद्री व व्यापारिक विवादों हेतु विशेष न्यायालय
राजनीतिक स्थिति	स्थानीय शासकों के अधीन	शक्ति में वृद्धि	मुगल सत्ता से टकराव (1686–1690)

◆ संक्षिप्त व्याख्या

1 प्रथम चरण (1661–1677)

- कंपनी को अपने कर्मचारियों पर दीवानी और फौजदारी न्याय देने का अधिकार मिला।
- गवर्नर और परिषद न्याय का संचालन करते थे।

2 द्वितीय चरण (1678–1686)

- न्यायिक प्रणाली अधिक संगठित हुई।
- कंपनी की शक्ति में वृद्धि हुई।
- अंग्रेजी विधि सिद्धांतों का अधिक प्रयोग शुरू हुआ।

3 तृतीय चरण (1686 के बाद)

- 1686 में एडमिरल्टी कोर्ट की स्थापना।
- कंपनी ने प्रशासन, न्याय और सैन्य शक्ति का पूर्ण प्रयोग किया।
- कंपनी व्यापारिक संस्था से राजनीतिक शक्ति बन गई।

चार्टर 1661 के तीनों चरणों में ईस्ट इंडिया कंपनी की शक्ति क्रमशः बढ़ती गई। प्रारंभ में उसे सीमित न्यायिक अधिकार मिले, द्वितीय चरण में न्यायिक व्यवस्था सुदृढ़ हुई, और तृतीय चरण में कंपनी ने पूर्ण प्रशासनिक व राजनीतिक शक्ति प्राप्त कर ली, जिससे वह एक व्यापारिक संस्था से शासकीय शक्ति में परिवर्तित हो गई।

************===============**************==============************==========

full course completed.

date 9.3.26 time 10.30 am period 3

British Settlement of Bombay and Administration of Justice (1668–1728)

1. Background of British Settlement in Bombay

The island of Bombay was originally under **Portuguese control**. In **1661**, it was given to **Charles II** as part of the marriage treaty when he married **Catherine of Braganza**. Later in **1668**, **Charles II** leased Bombay to the **East India Company** for a yearly rent of **£10**. After that, the British started establishing **administration and courts in Bombay**.

Administration of Justice in Bombay (1668–1728) The development of courts during this period can be divided into **three stages**.

1. Gerald Aungier's Judicial Plan (1670) The Governor **Gerald Aungier** organized the first proper judicial system in Bombay.

Courts Established

1. **Court of Judicature**

  - Highest court in Bombay
  - Decided civil and criminal cases

2. **Lower Courts**
   - Local courts to decide small disputes
3. **Panchayat Courts**
   - For Indians according to local customs

Features

- Simple and quick justice
- Application of **English law and local customs**
- Governor and council had judicial powers

2. Court System of 1683 - In **1683**, the **East India Company** established **Admiralty Court**.

Admiralty Court

- Dealt with **maritime and commercial disputes**
- Included cases relating to **shipping and trade**
- The judge was usually a legally trained person

3. Court of Judicature (1718) - In **1718**, a new **Court of Judicature** was established.

Structure

- One **Chief Justice**
- Nine other judges (members of the council)

Jurisdiction

1. **Civil cases**
2. **Criminal cases**
3. **Commercial disputes**

Features

- Applied **English law, company regulations, and local customs**
- Governor had supervisory power

Importance of the Period (1668–1728)

1. It laid the **foundation of the British judicial system in Bombay**.
2. It introduced **English legal principles in India**.
3. It established **organized courts and administration of justice**.

बॉम्बे में ब्रिटिश बसाहट और न्याय प्रशासन (1668–1728) पृष्ठभूमि -- बॉम्बे पहले **पुर्तगालियों के अधीन** था। **1661 में** यह इंग्लैंड के राजा **Charles II** को उनकी शादी के समय दहेज में मिला, जब उनका विवाह **Catherine of Braganza** से हुआ। **1668 में** राजा ने इसे **East India Company** को £10 वार्षिक किराए पर दे दिया।

न्याय प्रशासन

1. जेराल्ड आंगियर की न्याय योजना (1670) गवर्नर **Gerald Aungier** ने न्याय व्यवस्था स्थापित की।

मुख्य न्यायालय

- कोर्ट ऑफ ज्यूडिकेचर
- निचली अदालतें
- पंचायती अदालतें

2. एडमिरल्टी कोर्ट (1683)

- समुद्री और व्यापारिक विवादों के लिए स्थापित
- जहाज और व्यापार संबंधी मामलों की सुनवाई

3. कोर्ट ऑफ ज्यूडिकेचर (1718)

- एक **मुख्य न्यायाधीश** और कई अन्य न्यायाधीश
- दीवानी और फौजदारी मामलों की सुनवाई

निष्कर्ष **1668–1728 का काल बॉम्बे में ब्रिटिश न्यायिक व्यवस्था की नींव रखने वाला काल था।** इसी समय भारत में **अंग्रेजी न्याय प्रणाली का प्रारंभ** हुआ।

Meaning of “Law” under Article 13 of the Constitution of India

Introduction **Article 13** of the **Constitution of India** deals with **laws inconsistent with or in derogation of Fundamental Rights**. It declares that any law which violates **Fundamental Rights** shall be **void**. Article 13 also explains what the word **“law”** means.

Definition of Law (Article 13(3)(a)) According to **Article 13(3)(a)**, the term **“law” includes**:

1. **Ordinance**
2. **Order**
3. **Bye-law**
4. **Rule**
5. **Regulation**
6. **Notification**
7. **Custom or Usage having the force of law**

This means the term **law is used in a very wide sense**.

Explanation

1. Ordinance

A law made by the **President or Governor** when the legislature is not in session.

2. Order

Directions issued by government authorities under legal power.

3. Bye-laws

Rules made by **local authorities or corporations**.

4. Rules and Regulations

Detailed provisions made for implementing laws.

5. Custom or Usage

A long-established practice accepted by society and recognized by law.

Example - Traditional customs in personal laws.

Purpose of Article 13 The main purpose is:

1. To **protect Fundamental Rights**.
2. To ensure that **all laws conform to the Constitution**.
3. To establish the **supremacy of the Constitution**.

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 13 में "कानून" का अर्थ

Article 13 यह घोषित करता है कि यदि कोई कानून **मौलिक अधिकारों के विरुद्ध है**, तो वह **अमान्य** (**Void)** होगा।

अनुच्छेद 13(3)(a) के अनुसार "कानून" में शामिल हैं

1. अध्यादेश (Ordinance)
2. आदेश (Order)
3. उपविधि (Bye-law)
4. नियम (Rule)
5. विनियम (Regulation)
6. अधिसूचना (Notification)
7. प्रथा या रिवाज (Custom or Usage)

अध्यादेश जब संसद या विधानमंडल का सत्र नहीं होता, तब राष्ट्रपति या राज्यपाल द्वारा बनाया गया कानून।

आदेश - सरकार द्वारा जारी निर्देश।

उपविधि - स्थानीय निकायों द्वारा बनाए गए नियम।

नियम और विनियम - किसी कानून को लागू करने के लिए बनाए गए विस्तृत प्रावधान।

प्रथा या रिवाज - लंबे समय से चली आ रही सामाजिक प्रथा जिसे कानून मान्यता देता है।

निष्कर्ष अनुच्छेद 13 में **"कानून" शब्द का अर्थ बहुत व्यापक है**, और इसमें केवल संसद द्वारा बनाए गए कानून ही नहीं बल्कि **सभी प्रकार के वैधानिक नियम और प्रथाएँ** शामिल हैं।

which type of Powers Granted to East India Company by the Charter of 1668 ?

The **Charter of 1668** authorized the **East India Company** to administer Bombay and exercise governmental authority.

1. Power of Administration

The Company was given the power to **govern and administer the island of Bombay**.
It could appoint **governors and other officers** for administration.

2. Legislative Power

The Company had the authority to **make laws, rules, and regulations** for the inhabitants of Bombay.

These laws were made for:

- Good governance
- Maintenance of peace and order

However, the laws had to be **consistent with English law**.

3. Judicial Power - The Company could **establish courts of justice** in Bombay.

These courts could decide:

- Civil disputes
- Criminal cases

This power laid the foundation of the **British judicial system in Bombay**.

4. Power to Punish Offenders - The Company had the power to **punish offenders**, including:

- Imprisonment
- Fines
- Other lawful punishments

5. Military Power

The Company could **raise armed forces** to defend Bombay and maintain security.

6. Power to Levy Taxes

The Company could **collect taxes and revenues** from the inhabitants for administration.

Importance of the Charter of 1668

1. It gave the **East India Company governmental authority**.
2. It allowed the Company to **administer justice in Bombay**.
3. It marked the **beginning of British administration in Bombay**.

1668 के चार्टर द्वारा ईस्ट इंडिया कंपनी को दी गई शक्तियाँ प्रमुख शक्तियाँ

1. प्रशासनिक शक्ति

कंपनी को **बॉम्बे का शासन और प्रशासन चलाने की शक्ति** दी गई।

2. विधायी शक्ति

कंपनी को **कानून, नियम और विनियम बनाने का अधिकार** दिया गया।

3. न्यायिक शक्ति

कंपनी को **न्यायालय स्थापित करने और न्याय देने की शक्ति** दी गई।

4. दंड देने की शक्ति

कंपनी अपराधियों को **जुर्माना, कारावास आदि दंड** दे सकती थी।

5. सैन्य शक्ति

कंपनी को **सुरक्षा के लिए सेना रखने की अनुमति** थी।

6. कर वसूलने की शक्ति

कंपनी को **कर और राजस्व वसूलने का अधिकार** दिया गया।

---

means that the **East India Company had the authority to make laws in these areas** for governing Bombay.

1. Laws relating to Worship and Religion

The Company could make rules regarding **religious practices and places of worship** of people living in Bombay, so that religious peace was maintained.

2. Common Right - "Common right" means **general civil rights of people**, such as:

- property rights
- contractual rights
- rights of citizens in daily life

The Company could regulate these rights through laws.

3. Legal Procedure - The Company could make rules regarding **court procedures**, such as:

- how cases would be filed
- how trials would be conducted
- how judgments would be given

4. Registration of Sales - The Company could regulate **sale and transfer of property or goods**, including:

- recording or registering sales
- preventing disputes in property transactions

5. Penal Offences - The Company had power to define **crimes and punishments**, such as:

- theft
- fraud
- violence

It could impose penalties like **fines or imprisonment**.

6. Military Discipline The Company could maintain **discipline among soldiers and armed forces** under its control.

7. Maintenance of Law and Order

The Company had authority to maintain **peace and public order** in Bombay.

Relation with the Charter of 1668 Under the **Charter of 1668**, the **East India Company** received **legislative and administrative powers** to govern Bombay. - Therefore, it could make laws regarding:

- religion and worship
- civil rights
- court procedures
- property transactions
- criminal offences
- military discipline
- maintenance of peace and order

These powers allowed the Company to **act like a government in Bombay**.

Admiralty Court (1684–1690) Establishment The **Admiralty Court** was established in **1684** in Bombay and madras in 1686 by the **East India Company** under the authority of the English Crown. It was created mainly to deal with **maritime disputes and sea crimes** arising from trade and navigation.

Jurisdiction of the Admiralty Court The court dealt with matters connected with the **sea and maritime trade**, such as:

1. Sea Crimes (Maritime Offences) Crimes committed on the sea, for example:

- Piracy

- Robbery on ships
- Murder or violence on ships
- Illegal capture of ships

2. Shipping Disputes

Disputes relating to:

- Ownership of ships
- Damage to ships
- Navigation problems

3. Trade and Commercial Matters

Cases relating to:

- Maritime trade
- Goods carried by ships
- Contracts connected with sea trade

4. Prize Cases Disputes regarding **captured ships or goods during conflicts or piracy**.

Composition of the Court The court generally consisted of:

- **One Judge (legally trained person)**
- **Two merchants as assistants**

These members decided cases related to maritime law.

Importance

1. It was the **first specialized maritime court in Bombay**.
2. It helped regulate **sea trade and shipping disputes**.
3. It introduced **English maritime law in India**.

एडमिरल्टी कोर्ट (1684–1690) स्थापना **1684 में बॉम्बे में एडमिरल्टी कोर्ट की स्थापना** की गई। यह अदालत समुद्र से संबंधित मामलों और समुद्री व्यापार के विवादों को हल करने के लिए बनाई गई थी।

अधिकार क्षेत्र

1. समुद्री अपराध (Sea Crimes)

- समुद्री डकैती (Piracy)
- जहाज पर हत्या या हिंसा
- जहाजों की लूट

2. जहाज संबंधी विवाद

- जहाज के स्वामित्व से जुड़े विवाद
- जहाज को नुकसान

3. समुद्री व्यापार के मामले

- जहाजों द्वारा ले जाए जाने वाले माल के विवाद
- समुद्री व्यापार के अनुबंध

4. Prize Cases युद्ध या समुद्री डकैती में पकड़े गए जहाजों और माल से संबंधित विवाद।

महत्व

- यह **भारत की प्रारंभिक समुद्री अदालतों में से एक थी।**
- इसने **समुद्री व्यापार और कानून को नियंत्रित किया।**
- इससे भारत में **अंग्रेजी समुद्री कानून की शुरुआत हुई।**

What is CPC? **CPC (Code of Civil Procedure, 1908)** is the law that **lays down the procedure for filing and conducting civil cases in civil courts in India**. It does not create rights; it only provides the **method or procedure to enforce civil rights**.

Definition - The **Code of Civil Procedure, 1908** is a procedural law that regulates the **process of civil litigation**, including filing suits, trial of cases, execution of decrees, and appeals.

Main Objectives of CPC

1. To **provide a uniform procedure** for civil courts in India.
2. To ensure **fair and speedy justice**.
3. To regulate **civil court proceedings**.

Matters Covered under CPC The CPC deals with procedures related to:

1. **Institution of suits** (how a case is filed)
2. **Issue of summons**
3. **Pleadings (plaint and written statement)**
4. **Trial of civil cases**
5. **Judgment and decree**
6. **Execution of decree**
7. **Appeals and revisions**

Example - If a person files a case for:

- property dispute
- breach of contract
- recovery of money

the **procedure followed by the court is governed by the CPC**.

CPC क्या है? **CPC (Code of Civil Procedure, 1908)** वह कानून है जो **भारत में दीवानी मामलों** (**civil cases**) **की न्यायालयीन प्रक्रिया को नियंत्रित करता है।** यह अधिकार नहीं देता बल्कि **अधिकारों को लागू करने की प्रक्रिया बताता है।**

CPC के मुख्य उद्देश्य

1. भारत के सभी दीवानी न्यायालयों के लिए **एक समान प्रक्रिया निर्धारित करना।**
2. **निष्पक्ष और शीघ्र न्याय सुनिश्चित करना।**
3. दीवानी मुकदमों की **न्यायिक प्रक्रिया को व्यवस्थित करना।**

CPC में शामिल प्रमुख विषय

1. वाद दायर करना (Institution of Suit)
2. समन जारी करना
3. वादपत्र और लिखित बयान
4. मुकदमे की सुनवाई
5. निर्णय और डिक्री
6. डिक्री का निष्पादन
7. अपील और पुनरीक्षण

The Code of Civil Procedure, 1908 (CPC) is divided into **Sections and Orders**.

1. Sections The CPC contains **158 Sections**. These sections explain the **general principles and powers of civil courts**.

Example:

- Jurisdiction of courts
- Res judicata
- Place of suing
- Appeals and revisions

2. Orders and Rules The CPC also contains **51 Orders** and **Rules under those Orders**. Orders mainly deal with the **detailed procedure of civil cases**.

Examples of important Orders:

- **Order 1** – Parties to suit
- **Order 5** – Issue of summons
- **Order 6** – Pleadings
- **Order 7** – Plaint
- **Order 8** – Written statement
- **Order 9** – Appearance of parties
- **Order 20** – Judgment and decree
- **Order 21** – Execution of decree
- **Order 41** – Appeals from original decrees

Code of Civil Procedure, 1908 में दो मुख्य भाग होते हैं:

1. धाराएँ (Sections) CPC में कुल **158 धाराएँ** हैं। ये धाराएँ **न्यायालय की शक्तियों और सामान्य सिद्धांतों** को बताती हैं।

2. आदेश (Orders) CPC में **51 Orders** हैं और प्रत्येक Order में कई **Rules** होते हैं। Orders में **मुकदमे की विस्तृत प्रक्रिया** दी गई है।

उदाहरण:

- Order 1 – वाद के पक्षकार
- Order 5 – समन जारी करना
- Order 6 – Pleadings
- Order 7 – वादपत्र (Plaint)
- Order 8 – Written Statement
- Order 21 – डिक्री का निष्पादन
- Order 41 – अपील

Difference Between CPC and CrPC CPC and CrPC are two important procedural laws in India.

- **Code of Civil Procedure, 1908 (CPC)** deals with **civil cases**.
- **Code of Criminal Procedure, 1973 (CrPC)** deals with **criminal cases**.

Main Differences

Basis	**CPC**	**CrPC**
Meaning	Procedure for civil cases	Procedure for criminal cases
Full Form	Code of Civil Procedure	Code of Criminal Procedure
Year	1908	1973
Nature of Cases	Civil disputes	Criminal offences
Objective	Enforcement of civil rights	Punishment of offenders
Parties	Plaintiff vs Defendant	State vs Accused
Examples of Cases	Property disputes, contract disputes, recovery of money	Theft, murder, assault, fraud

Example Civil Case (CPC)- A files a suit against B for **recovery of money or property dispute**.

Criminal Case (CrPC) - The **State prosecutes a person for theft or murder**.

CPC और CrPC में अंतर

आधार	**CPC**	**CrPC**
पूरा नाम	सिविल प्रक्रिया संहिता	दंड प्रक्रिया संहिता
वर्ष	1908	1973
मामलों का प्रकार	दीवानी मामले	आपराधिक मामले
उद्देश्य	नागरिक अधिकारों का संरक्षण	अपराधियों को दंड देना
पक्षकार	वादी और प्रतिवादी	राज्य और अभियुक्त

निष्कर्ष CPC दीवानी मामलों की प्रक्रिया बताता है, जबकि CrPC आपराधिक मामलों की प्रक्रिया को नियंत्रित करता है।

*************==============**************==================***************

date 11.3.26 time 10.30 am period 2

Warren Hastings in Legal History

Subject: **Legal History** / Indian Legal System

Warren Hastings was the **first Governor-General of Bengal (1772–1785)** under the **East India Company**. He played a very important role in the **development of the British judicial system in India**. His reforms are known as the **Judicial Plan of 1772**.

1. Introduction (परिचय) Warren Hastings introduced many judicial reforms in India to improve the administration of justice. Before his reforms, the judicial system was **corrupt and disorganized**. In **1772**, he introduced a new judicial system called the **Plan of 1772**, which reorganized courts in Bengal, Bihar, and Orissa.

2. Judicial Plan of 1772 (1772 की न्याय योजना)

The **Judicial Plan of 1772** was introduced by Warren Hastings to establish a proper court system.

Main Features

1. Establishment of Civil Courts (Diwani Adalat)

- Civil courts were established in every district.
- These courts dealt with cases related to:
    - property
    - inheritance
    - marriage
    - caste
    - contracts

The district collector acted as the judge.

2. Establishment of Criminal Courts (Faujdari Adalat)

Criminal courts were also established in districts. They dealt with cases such as:

- theft
- murder
- robbery
- other crimes

These courts were supervised by **Indian judges and Muslim law officers**.

3. Sadar Diwani Adalat

A higher civil court called **Sadar Diwani Adalat** was established at Calcutta.

It was the **highest civil court of appeal**.

4. Sadar Nizamat Adalat

The highest criminal court was **Sadar Nizamat Adalat**.

It handled appeals in criminal cases.

5. Application of Personal Laws

Warren Hastings introduced the rule that:

- **Hindus** would be governed by **Hindu Law** in matters of marriage and inheritance.
- **Muslims** would be governed by **Muslim Law**.

This policy respected the religious customs of Indians.

3. Judicial Plan of 1774

After the **Regulating Act 1773**, the **Supreme Court of Calcutta** was established in **1774**.

This created conflicts between the **Supreme Court** and the Company's courts.

4. Importance of Warren Hastings' Reforms

The reforms of Warren Hastings were important because:

1. They created the **first organized judicial system in India**.
2. They separated **civil and criminal courts**.
3. They introduced **appeal courts**.
4. They respected **Hindu and Muslim personal laws**.
5. They laid the **foundation of the modern Indian judiciary**.

5. Conclusion (निष्कर्ष)

Warren Hastings is considered a **pioneer of the modern judicial system in India**.
His judicial reforms improved the administration of justice and established a structured court system.

Warren Hastings का योगदान

1. परिचय Warren Hastings को भारत में ब्रिटिश न्यायिक व्यवस्था की नींव रखने वाला माना जाता है। वे **1772 से 1785 तक बंगाल के गवर्नर-जनरल** रहे और **East India Company** के प्रशासन को संगठित किया। उनसे पहले भारत में न्याय व्यवस्था **अव्यवस्थित और भ्रष्ट** थी। इसलिए उन्होंने **1772 में न्यायिक सुधार (Judicial Plan)** लागू किए, जिनसे एक संगठित अदालत प्रणाली की शुरुआत हुई।

2. 1772 की न्याय योजना (Judicial Plan of 1772) Warren Hastings ने **1772 में न्यायिक योजना** लागू की, जिसके द्वारा बंगाल, बिहार और उड़ीसा में न्यायालयों की स्थापना की गई।

मुख्य विशेषताएँ

1. दीवानी अदालत (Diwani Adalat)

प्रत्येक जिले में **दीवानी अदालत** स्थापित की गई।

इन अदालतों में निम्नलिखित मामलों की सुनवाई होती थी:

- संपत्ति (Property)
- उत्तराधिकार (Inheritance)
- विवाह (Marriage)
- जाति संबंधी विवाद
- अनुबंध (Contract)

इन अदालतों का प्रमुख **जिला कलेक्टर** होता था।

2. फौजदारी अदालत (Faujdari Adalat)

जिलों में **फौजदारी अदालतें** भी स्थापित की गईं। इन अदालतों में अपराधों की सुनवाई होती थी, जैसे:

- चोरी
- हत्या
- डकैती
- अन्य आपराधिक मामले

इन अदालतों में **मुस्लिम कानून के अनुसार न्याय दिया जाता था।**

3. सदर दीवानी अदालत (Sadar Diwani Adalat)

यह **सबसे उच्च दीवानी अपीलीय अदालत** थी। यह अदालत **कलकत्ता** में स्थापित की गई थी और जिला अदालतों के फैसलों के विरुद्ध अपील यहीं की जाती थी।

4. सदर निजामत अदालत (Sadar Nizamat Adalat) यह **सबसे उच्च फौजदारी अदालत** थी। यह अदालत आपराधिक मामलों की अपील सुनती थी।

5. व्यक्तिगत कानून का प्रयोग Warren Hastings ने यह नियम बनाया कि:

- **हिंदुओं के मामलों में हिंदू कानून लागू होगा**
- **मुसलमानों के मामलों में मुस्लिम कानून लागू होगा**

इससे लोगों की **धार्मिक परंपराओं का सम्मान** किया गया।

3. 1774 के बाद की स्थिति

Regulating Act 1773 के बाद **Supreme Court of Calcutta** की स्थापना 1774 में हुई। इससे कंपनी की अदालतों और सुप्रीम कोर्ट के बीच **अधिकार क्षेत्र को लेकर विवाद** पैदा हो गए।

4. वारेन हेस्टिंग्स के सुधारों का महत्व --Warren Hastings के सुधार बहुत महत्वपूर्ण थे क्योंकि:

1. भारत में **संगठित न्याय व्यवस्था की शुरुआत** हुई।
2. **दीवानी और फौजदारी अदालतों का अलग-अलग गठन** हुआ।
3. **अपील की व्यवस्था** शुरू हुई।
4. **हिंदू और मुस्लिम व्यक्तिगत कानूनों को मान्यता** दी गई।
5. आधुनिक भारतीय न्याय प्रणाली की **नींव रखी गई**।
6. **निष्कर्ष** --Warren Hastings को भारत में आधुनिक न्यायिक व्यवस्था का **प्रवर्तक (Pioneer)** माना जाता है। उनके द्वारा किए गए न्यायिक सुधारों ने भारत में कानून और न्याय प्रशासन को व्यवस्थित किया।

Sir John Biggs

1. परिचय Sir John Biggs ब्रिटिश शासनकाल के एक महत्वपूर्ण न्यायाधीश थे। वे **Supreme Court of Judicature at Fort William (कलकत्ता सुप्रीम कोर्ट**) के मुख्य न्यायाधीश (Chief Justice) रहे। उन्होंने भारत में ब्रिटिश न्यायिक व्यवस्था के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

2. नियुक्ति (Appointment) Sir John Biggs को **1859 में कलकत्ता सुप्रीम कोर्ट का मुख्य न्यायाधीश** नियुक्त किया गया। उनकी नियुक्ति ब्रिटिश सरकार द्वारा की गई थी और उन्होंने न्यायिक प्रशासन को मजबूत करने का प्रयास किया।

3. योगदान (Contribution)

1. भारत में ब्रिटिश न्यायिक प्रणाली को व्यवस्थित करने में योगदान दिया।
2. सुप्रीम कोर्ट में न्यायिक प्रक्रिया को अधिक स्पष्ट और संगठित बनाया।
3. कानून के शासन (Rule of Law) को लागू करने में भूमिका निभाई।
4. ब्रिटिश और भारतीय कानूनों के बीच संतुलन बनाने का प्रयास किया।

4. सुप्रीम कोर्ट की भूमिका जिस अदालत में **Sir John Biggs** कार्यरत थे, वह अदालत **Regulating Act 1773** के तहत स्थापित **कलकत्ता सुप्रीम कोर्ट** की परंपरा का हिस्सा थी। यह अदालत मुख्य रूप से:

- ब्रिटिश नागरिकों के मामलों की सुनवाई
- दीवानी और फौजदारी मामलों का निर्णय
- न्यायिक अपीलों की सुनवाई
  करती थी।

5. निष्कर्ष Sir John Biggs ब्रिटिश भारत के एक महत्वपूर्ण न्यायाधीश थे। उन्होंने न्यायिक प्रशासन को मजबूत करने और अदालतों के कामकाज को व्यवस्थित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

---

question what is the rearrest of the rearrest case criteria?

Bachan Singh v. State of Punjab (1980)

विषय: **Constitutional Law / Criminal Law** यह भारत के सर्वोच्च न्यायालय का एक **महत्वपूर्ण** (**landmark) निर्णय** है जिसमें **मृत्युदंड** (**Death Penalty)** की संवैधानिक वैधता पर फैसला दिया गया।

1. केस का परिचय

- केस: **Bachan Singh v. State of Punjab (1980)** निर्णय तिथि: **9 मई 1980** न्यायालय: **Supreme Court of India** पीठ: 5 न्यायाधीशों की संविधान पीठ निर्णय: **4:1 बहुमत** से दिया गया।

2. मामले के तथ्य (**Facts of the Case)** बचन सिंह को **Indian Penal Code 1860 की धारा 302** के अंतर्गत हत्या के अपराध में दोषी पाया गया।

- उसने तीन व्यक्तियों की हत्या कर दी थी।
- सेशन कोर्ट ने उसे **मृत्युदंड** (**Death Penalty)** की सजा दी।
- हाई कोर्ट ने भी इस सजा को बरकरार रखा।
- इसके बाद उसने **सुप्रीम कोर्ट में अपील** की।

3. मुख्य कानूनी प्रश्न (**Issues)**

1. क्या **मृत्युदंड** (**Death Penalty)** भारतीय संविधान के विरुद्ध है?
2. क्या **धारा 302 IPC** और **CrPC की धारा 354(3)** संविधान के **अनुच्छेद 14, 19 और 21** का उल्लंघन करती हैं?

4. न्यायालय का निर्णय (**Judgment) सुप्रीम कोर्ट ने 4:1 बहुमत से निर्णय दिया कि**:

- **मृत्युदंड असंवैधानिक नहीं है।**
- यह संविधान के **अनुच्छेद 21 (Right to Life)** का उल्लंघन नहीं करता, यदि इसे **कानून द्वारा स्थापित उचित प्रक्रिया** के अनुसार दिया जाए।

5. "Rarest of Rare" सिद्धांत इस केस में सुप्रीम कोर्ट ने **"Rarest of Rare Doctrine"** स्थापित किया। इस सिद्धांत के अनुसार:

- **मृत्युदंड केवल अत्यंत दुर्लभ मामलों में ही दिया जाना चाहिए।**
- सामान्य स्थिति में **आजीवन कारावास** (**Life Imprisonment)** ही सजा होनी चाहिए।

- न्यायालय को **aggravating (गंभीर परिस्थितियाँ) और mitigating (कम करने वाली परिस्थितियाँ)** दोनों को ध्यान में रखना होगा।

6. निर्णय का महत्व (Importance)

1. भारत में **मृत्युदंड की संवैधानिक वैधता** को स्वीकार किया गया।
2. **"Rarest of Rare Doctrine"** की स्थापना हुई।
3. यह भारत में **मृत्युदंड के सिद्धांत का आधारभूत (foundation) निर्णय** बन गया।
4. बाद में कई मामलों में इसी सिद्धांत का पालन किया गया, जैसे **Machhi Singh v. State of Punjab (1983)**।

7. निष्कर्ष **Bachan Singh v. State of Punjab (1980)** भारतीय न्यायपालिका का एक ऐतिहासिक निर्णय है। इस फैसले ने यह सिद्ध किया कि **मृत्युदंड केवल सबसे गंभीर और दुर्लभ अपराधों में ही दिया जाना चाहिए**, जिससे मानव जीवन की गरिमा की रक्षा हो सके।

question (method of execution) in capital punishment case.

Deena v. Union of India (1983) यह भारत के **Supreme Court of India** का एक महत्वपूर्ण निर्णय है, जिसमें **फांसी देने की विधि (method of execution)** की संवैधानिक वैधता पर विचार किया गया।

1. केस का परिचय **Deena v. Union of India (1983)** न्यायालय: **Supreme Court of India** विषय: मृत्युदंड देने की विधि की संवैधानिकता संबंधित कानून: **Indian Penal Code 1860** और **Code of Criminal Procedure 1973**

2. मामले के तथ्य (Facts) इस मामले में याचिकाकर्ता **Deena** को हत्या के अपराध में **मृत्युदंड** की सजा दी गई थी। उन्होंने अदालत में यह तर्क दिया कि भारत में दी जाने वाली **फांसी द्वारा मृत्यु (hanging by neck until death)** एक **क्रूर और अमानवीय दंड** है। उन्होंने कहा कि यह **भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21** (जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार) का उल्लंघन है।

3. मुख्य कानूनी प्रश्न (Issue) क्या **फांसी देकर मृत्युदंड देना** संविधान के **अनुच्छेद 21** का उल्लंघन है?

4. न्यायालय का निर्णय (Judgment) Supreme Court of India ने यह निर्णय दिया कि:

- **फांसी द्वारा मृत्युदंड देना असंवैधानिक नहीं है।**
- यह दंड देने की एक **कानूनी और मान्य विधि** है।
- यह विधि अत्यधिक क्रूर या अमानवीय नहीं मानी जा सकती।

इसलिए अदालत ने याचिका को **खारिज (dismiss)** कर दिया।

5. निर्णय का महत्व

1. इस मामले में अदालत ने **फांसी देने की विधि को वैध माना।**
2. अदालत ने कहा कि यह दंड **कानून द्वारा निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार** दिया जाता है।
3. इस फैसले ने मृत्युदंड से संबंधित कानून को स्पष्ट किया।

6. संबंधित महत्वपूर्ण केस --इस निर्णय का संबंध एक अन्य प्रसिद्ध केस से भी है:

- **Bachan Singh v. State of Punjab (1980)** – जिसमें **"Rarest of Rare" सिद्धांत** स्थापित किया गया था।

7. निष्कर्ष **Deena v. Union of India (1983)** में सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट किया कि **फांसी द्वारा मृत्युदंड देना संविधान के अनुच्छेद 21 का उल्लंघन नहीं है**, इसलिए यह भारत में एक वैध दंड विधि है।

question sexual assault against women. **Sakshi v. Union of India (2004) – Important Case Law**

यह मामला **महिलाओं और बच्चों के यौन अपराधों से संरक्षण** से संबंधित एक महत्वपूर्ण निर्णय है, जिसे **Supreme Court of India** ने दिया था।

1. केस का परिचय **Sakshi v. Union of India (2004)** न्यायालय: **Supreme Court of India** याचिकाकर्ता: **Sakshi (एक NGO)** विषय: बलात्कार कानूनों की व्याख्या और बच्चों की सुरक्षा

यह याचिका एक NGO **Sakshi** द्वारा दायर की गई थी, जिसका उद्देश्य **यौन अपराधों से बच्चों और महिलाओं की बेहतर सुरक्षा** सुनिश्चित करना था।

2. मामले के तथ्य (Facts) --NGO **Sakshi** ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर कर कहा कि:

- भारतीय दंड संहिता में बलात्कार की परिभाषा बहुत **संकीर्ण (narrow)** है।
- कई प्रकार के **यौन उत्पीड़न** कानून के दायरे से बाहर रह जाते हैं।
- इससे विशेषकर **बच्चों के साथ होने वाले यौन अपराधों** को साबित करना कठिन हो जाता है।

3. मुख्य कानूनी प्रश्न (Issue)

1. क्या बलात्कार की परिभाषा को व्यापक (broader) बनाया जाना चाहिए?
2. क्या बच्चों के यौन शोषण के मामलों में न्यायालय की प्रक्रिया को अधिक संवेदनशील बनाया जाना चाहिए?

4. न्यायालय का निर्णय (Judgment) **--Supreme Court of India** ने कहा कि:

- अदालत कानून की परिभाषा को बदल नहीं सकती, यह काम **संसद** का है।
- लेकिन अदालत ने **मुकदमों की प्रक्रिया में सुधार के निर्देश** दिए।

5. अदालत द्वारा दिए गए महत्वपूर्ण निर्देश

1. बच्चों के बयान **संवेदनशील वातावरण में** लिए जाएँ।
2. पीड़ित बच्चे को **आरोपी के सामने सीधे खड़ा न किया जाए**।
3. बयान के दौरान **वीडियो लिंक या स्क्रीन का उपयोग** किया जा सकता है।
4. अदालत को बच्चों के साथ **सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार** करना चाहिए।

6. निर्णय का महत्व

1. इस फैसले ने **बच्चों के अधिकारों की सुरक्षा को मजबूत किया**।
2. अदालत ने **child-friendly judicial procedure** की अवधारणा को बढ़ावा दिया।
3. बाद में भारत में **बाल यौन अपराध कानूनों के सुधार** के लिए यह फैसला महत्वपूर्ण आधार बना।

7. निष्कर्ष **Sakshi v. Union of India (2004)** भारतीय न्यायपालिका का एक महत्वपूर्ण निर्णय है, जिसने **यौन अपराधों के मामलों में पीड़ितों के प्रति संवेदनशील न्यायिक प्रक्रिया** को बढ़ावा दिया और बच्चों की सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश दिए।

question what is Committee of Circuit (सर्किट समिति) ?

1. परिचय **Committee of Circuit** की स्थापना **1772 में** की गई थी। यह व्यवस्था **Warren Hastings** द्वारा लागू की गई न्यायिक योजना (Judicial Plan of 1772) का हिस्सा थी। इस समिति का मुख्य उद्देश्य **आपराधिक मामलों की सुनवाई करना और न्याय प्रशासन को सुधारना** था।

2. गठन (Composition) Committee of Circuit में सामान्यतः

- **East India Company** के अधिकारी
- राजस्व परिषद (Council) के सदस्य

शामिल होते थे। ये सदस्य अलग-अलग जिलों में जाकर **अपराध मामलों की सुनवाई** करते थे।

3. कार्य (Functions) Committee of Circuit के मुख्य कार्य थे:

1. जिलों का दौरा करके **फौजदारी मामलों की सुनवाई करना**।
2. **Faujdari Adalat** के कामकाज की निगरानी करना।
3. गंभीर अपराधों में **सजा निर्धारित करना**।
4. न्यायिक व्यवस्था को **व्यवस्थित और नियंत्रित करना**।

4. महत्व (Importance)

1. यह भारत में **ब्रिटिश आपराधिक न्याय प्रणाली** का प्रारंभिक रूप था।

2. इससे न्यायालयों की कार्यप्रणाली में **नियम और व्यवस्था** आई।
3. यह व्यवस्था बाद में **स्थायी अदालत प्रणाली** की नींव बनी।

5. समाप्ति (Abolition) बाद में **Charles Cornwallis** ने **1793 के न्यायिक सुधारों** (**Cornwallis Reforms)** के दौरान **Committee of Circuit को समाप्त कर दिया** और एक नई अदालत प्रणाली स्थापित की।

***** sadar diwani Adalat (civil process) diwan sahib**

***** sadar nizamat adalat (criminal process) nizam sahib**

Mofussil Diwani Adalat (मुफस्सिल दीवानी अदालत)

1. परिचय **Mofussil Diwani Adalat** ब्रिटिश काल में स्थापित **जिला स्तर की दीवानी अदालतें** थीं। इन अदालतों की स्थापना **Warren Hastings** ने **1772 की न्यायिक योजना** (**Judicial Plan of 1772)** के अंतर्गत की थी। इनका उद्देश्य **जिलों में दीवानी** (**Civil) मामलों का निपटारा करना** था।

2. "Mofussil" का अर्थ "Mofussil" शब्द का अर्थ है **कलकत्ता के बाहर का क्षेत्र** (**प्रांत या जिला क्षेत्र**)। इसलिए **Mofussil Diwani Adalat** का अर्थ है **जिलों में स्थित दीवानी अदालतें**।

3. गठन (Composition) - इन अदालतों के प्रमुख होते थे:

- **जिला कलेक्टर** (**District Collector)**
- भारतीय कानून विशेषज्ञ जैसे:
    - **पंडित** (हिंदू कानून के लिए)
    - **काज़ी या मौलवी** (मुस्लिम कानून के लिए)

4. अधिकार क्षेत्र (Jurisdiction) - इन अदालतों में **दीवानी मामलों की सुनवाई** होती थी, जैसे:

1. संपत्ति (Property disputes)
2. उत्तराधिकार (Inheritance)
3. विवाह संबंधी मामले
4. अनुबंध (Contracts)
5. ऋण और व्यापार विवाद

5. अपील की व्यवस्था Mofussil Diwani Adalat के निर्णय के विरुद्ध अपील की जा सकती थी: → **Sadar Diwani Adalat** में यह उस समय की **सबसे उच्च दीवानी अदालत** थी।

6. महत्व (Importance)

1. जिलों में **न्याय प्रशासन की शुरुआत** हुई।
2. लोगों को **स्थानीय स्तर पर न्याय मिलने लगा।**
3. यह भारत में **आधुनिक दीवानी न्यायालय प्रणाली की नींव** बनी।

7. निष्कर्ष **Mofussil Diwani Adalat** ब्रिटिश काल की महत्वपूर्ण अदालत थी जिसने भारत में **जिला स्तर की दीवानी न्याय प्रणाली** को विकसित किया और बाद में आधुनिक अदालत व्यवस्था के लिए आधार तैयार किया।

Mofussil Nizamat Adalat (मुफस्सिल निजामत अदालत)

1. परिचय **Mofussil Nizamat Adalat** ब्रिटिश शासनकाल में स्थापित **जिला स्तर की फौजदारी (Criminal) अदालतें** थीं। इनकी स्थापना **Warren Hastings** ने **1772 की न्यायिक योजना (Judicial Plan of 1772)** के अंतर्गत की थी।इन अदालतों का मुख्य उद्देश्य **जिलों में अपराध संबंधी मामलों का निपटारा करना** था।

2. "Mofussil" का अर्थ "Mofussil" का अर्थ है **कलकत्ता के बाहर का क्षेत्र या जिला।** इसलिए **Mofussil Nizamat Adalat** का अर्थ है **जिलों में स्थित फौजदारी अदालत।**

3. गठन (Composition) इन अदालतों में निम्न अधिकारी शामिल होते थे:

- **काजी (Qazi)**
- **मुफ्ती (Mufti)**
- **मौलवी (Maulvi)**

ये अधिकारी **मुस्लिम आपराधिक कानून** के अनुसार मामलों का निर्णय करते थे। इन अदालतों की **निगरानी ब्रिटिश अधिकारी (District Collector)** करते थे।

4. अधिकार क्षेत्र (Jurisdiction) - इन अदालतों में **आपराधिक मामलों की सुनवाई** होती थी, जैसे:

1. हत्या (Murder)
2. चोरी (Theft)
3. डकैती (Robbery)
4. अन्य गंभीर अपराध

5. अपील की व्यवस्था - Mofussil Nizamat Adalat के फैसलों के विरुद्ध अपील की जाती थी: → **Sadar Nizamat Adalat** में यह उस समय की **सबसे उच्च फौजदारी अदालत** थी।

6. महत्व (Importance)

1. जिलों में **आपराधिक न्याय प्रणाली की शुरुआत** हुई।

2. अपराधों के मामलों में **संगठित न्याय व्यवस्था स्थापित हुई।**
3. यह भारत की आधुनिक **क्रिमिनल कोर्ट प्रणाली** की आधारशिला बनी।

7. निष्कर्ष Mofussil Nizamat Adalat ब्रिटिश काल की महत्वपूर्ण अदालत थी जिसने भारत में **जिला स्तर पर आपराधिक न्याय प्रणाली** को विकसित किया और बाद में आधुनिक अदालत व्यवस्था के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

describe intestate and Testamentary?

1. Intestate Succession (अवसीयत के बिना उत्तराधिकार) जब कोई व्यक्ति **बिना वसीयत (Will) बनाए मर जाता है**, तो उसकी संपत्ति का वितरण कानून के अनुसार होता है। इसे **Intestate Succession** कहते हैं। **Definition** Intestate succession means **succession to property when a person dies without making a will**.

यदि कोई व्यक्ति अपनी संपत्ति के बारे में **कोई वसीयत नहीं बनाता** और उसकी मृत्यु हो जाती है, तो उसकी संपत्ति उसके **कानूनी वारिसों** को मिलती है।

Laws Governing Intestate Succession in India

- **Hindu Succession Act 1956** (हिंदुओं के लिए)
- **Indian Succession Act 1925** (अन्य समुदायों के लिए)

2. Testamentary Succession (वसीयत द्वारा उत्तराधिकार) जब कोई व्यक्ति **अपनी मृत्यु से पहले वसीयत (Will) बनाकर यह तय करता है कि उसकी संपत्ति किसे मिलेगी**, तो इसे **Testamentary Succession** कहते हैं।

Definition Testamentary succession means **succession to property according to the will made by the deceased person**.

Example यदि कोई व्यक्ति अपनी वसीयत में लिख देता है कि उसकी संपत्ति उसके बेटे को मिलेगी, तो मृत्यु के बाद संपत्ति उसी व्यक्ति को दी जाएगी।

3. Intestate और Testamentary Succession में अंतर

Intestate Succession	**Testamentary Succession**
वसीयत नहीं होती	वसीयत होती है
संपत्ति कानून के अनुसार बंटती है	संपत्ति वसीयत के अनुसार बंटती है
मृतक की इच्छा लागू नहीं होती	मृतक की इच्छा लागू होती है
कानूनी वारिस तय होते हैं	वसीयत में बताए व्यक्ति को संपत्ति मिलती है

4. निष्कर्ष

- **Intestate Succession** तब लागू होता है जब व्यक्ति **बिना वसीयत मरता है।**

- **Testamentary Succession** तब लागू होता है जब व्यक्ति **वसीयत बनाकर संपत्ति का बंटवारा तय करता है।**

दोनों ही उत्तराधिकार के महत्वपूर्ण तरीके हैं और भारतीय कानून में इनका अलग-अलग प्रावधान है।

---

question Fatwa (फतवा) क्या है? **Fatwa** इस्लामी कानून (**Islamic Law**) में किसी धार्मिक या कानूनी प्रश्न पर **धर्म विद्वान द्वारा दिया गया मत या सलाह** होता है।

1. Definition **Fatwa** का अर्थ है **इस्लामी कानून के आधार पर किसी धार्मिक या कानूनी प्रश्न का उत्तर या राय देना**। यह राय आमतौर पर किसी **मुफ्ती** (**Mufti**) द्वारा दी जाती है।

2. Who gives Fatwa (फतवा कौन देता है) फतवा देने वाला व्यक्ति कहलाता है:

- **Mufti (मुफ्ती)** – इस्लामी कानून का विद्वान जो धार्मिक प्रश्नों पर राय देता है।

3. Nature of Fatwa

- फतवा **कोर्ट का आदेश नहीं होता।**
- यह **कानूनी रूप से बाध्यकारी** (**binding**) नहीं होता।
- यह केवल **धार्मिक सलाह या मत** होता है।

4. Example यदि किसी व्यक्ति को यह जानना हो कि **किसी धार्मिक कार्य का तरीका क्या है**, तो वह किसी **मुफ्ती से फतवा मांग सकता है।**

5. Important Point in Indian Law भारत में **Supreme Court of India** ने एक महत्वपूर्ण फैसले में कहा है कि फतवा **कानूनी रूप से बाध्यकारी नहीं है** और इसे किसी व्यक्ति पर जबरदस्ती लागू नहीं किया जा सकता।

यह बात केस **Vishwa Lochan Madan v. Union of India (2014)** में स्पष्ट की गई।

यह भारत के **Supreme Court of India** का एक महत्वपूर्ण निर्णय है, जिसमें **फतवा** (**Fatwa**) की कानूनी स्थिति पर फैसला दिया गया।

1. केस का परिचय **Vishwa Lochan Madan v. Union of India (2014)** न्यायालय: **Supreme Court of India** विषय: फतवा की वैधता और उसका प्रभाव याचिकाकर्ता: **Vishwa Lochan Madan**

इस मामले में यह प्रश्न उठाया गया कि **क्या फतवा जारी करना संविधान के अनुसार वैध है और क्या यह लोगों पर बाध्यकारी हो सकता है?**

2. मामले के तथ्य (Facts) याचिकाकर्ता **Vishwa Lochan Madan** ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की और कहा कि:

- कुछ धार्मिक संस्थाएँ **फतवा जारी करके लोगों के जीवन और अधिकारों को प्रभावित करती हैं।**

- कई बार ये फतवे **व्यक्तिगत स्वतंत्रता और कानून के शासन (Rule of Law)** के खिलाफ होते हैं।
- इसलिए फतवा जारी करने पर रोक लगाई जानी चाहिए।

3. मुख्य कानूनी प्रश्न (Issue)

1. क्या फतवा जारी करना **संविधान के विरुद्ध** है?
2. क्या फतवा **कानूनी रूप से बाध्यकारी (binding)** होता है?

4. न्यायालय का निर्णय (Judgment) **Supreme Court of India** ने अपने निर्णय में कहा:

1. **फतवा देना स्वयं में अवैध नहीं है।**
2. लेकिन **फतवा कानूनी रूप से बाध्यकारी नहीं होता।**
3. किसी व्यक्ति को **फतवे का पालन करने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता।**
4. यदि कोई फतवा **किसी व्यक्ति के अधिकारों का उल्लंघन करता है**, तो उसे अदालत में चुनौती दी जा सकती है।

5. निर्णय का महत्व (Importance)

1. अदालत ने स्पष्ट किया कि **भारत में कानून सर्वोच्च है।**
2. धार्मिक राय या फतवा **कानून से ऊपर नहीं हो सकता।**
3. फतवा केवल **धार्मिक सलाह (advisory opinion)** है।
4. यह फैसला **व्यक्तिगत स्वतंत्रता और संविधान की सर्वोच्चता** को मजबूत करता है।

6. निष्कर्ष **Vishwa Lochan Madan v. Union of India (2014)** में सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट किया कि **फतवा केवल एक धार्मिक राय है, यह कानूनी रूप से बाध्यकारी नहीं है और किसी व्यक्ति को इसका पालन करने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता।**

---

question who is Sir Elijah Impey?

1. परिचय Sir Elijah Impey ब्रिटिश काल के एक प्रसिद्ध न्यायाधीश थे। वे भारत के पहले **Chief Justice of the Supreme Court of Judicature at Fort William (Calcutta Supreme Court)** थे।

2. नियुक्ति (Appointment)

- उनकी नियुक्ति **1774 में** हुई।
- यह अदालत **Regulating Act 1773** के अंतर्गत स्थापित की गई थी।

3. कार्य और भूमिका Sir Elijah Impey ने:

1. कलकत्ता सुप्रीम कोर्ट में **न्यायिक प्रशासन को संगठित किया।**
2. ब्रिटिश कानून को भारत में लागू करने में भूमिका निभाई।
3. अदालत की कार्यप्रणाली को व्यवस्थित किया।

4. वॉरेन हेस्टिंग्स से संबंध **Sir Elijah Impey और Warren Hastings के बीच घनिष्ठ संबंध थे।** इसी कारण कई लोगों ने आरोप लगाया कि उन्होंने **हेस्टिंग्स के पक्ष में निर्णय दिए।**

5. नंद कुमार केस (**Important Case) Sir Elijah Impey** का नाम एक प्रसिद्ध मामले से जुड़ा है:

→ **Nand Kumar Case (1775)** इस मामले में **राजा नंद कुमार** को जालसाजी (forgery) के आरोप में **फांसी की सजा** दी गई थी। इस निर्णय की बहुत आलोचना हुई और इसे कई इतिहासकारों ने **न्यायिक हत्या** (**Judicial Murder)** कहा।

6. महत्व

1. वे भारत के **पहले Chief Justice** थे।
2. उन्होंने भारत में **ब्रिटिश न्याय प्रणाली की शुरुआत** की।
3. उनका कार्यकाल भारतीय **कानूनी इतिहास का महत्वपूर्ण चरण** माना जाता है।

************===============*************=================******************

date 17.3.26 time 10.30 am period 2 Tuesday

the supreme court of judicature of Calcutta regulating act of 1773

first the committee whole formed by British govt.

second select committee and secret committee.

board of director

a 24 members in this.

b section by the general meeting of share holder.

c time for director (4years).

d 25% of director retired every year.

regulating act sub Clouse 1-6

treasury bench

governor in council (governor general)

governor general in council

governor general in council (international matter)

**the team members of Warren Hastings did not support him.

case Raja Nand Kumar Case The **Raja Nand Kumar Case (1775)** is one of the most controversial cases in **Indian legal history**, often criticized as a **miscarriage of justice** and an example of misuse of judicial power during British rule.

Background

- Raja Nand Kumar was a high-ranking Indian official in Bengal.
- He accused Warren Hastings of **corruption and bribery**.
- Soon after, Nand Kumar himself was charged with **forgery**.

Trial

- The trial was conducted before the **Supreme Court of Calcutta**.
- The Chief Justice was Sir Elijah Impey, who was a **close friend of Warren Hastings**.
- Nand Kumar was accused of forging a document (a bond).
- He was tried under **English law**, not Indian law.

Judgment

- Raja Nand Kumar was found **guilty of forgery**.
- He was sentenced to **death by hanging** in 1775.
- This was one of the **first executions under British rule in India**.

Why the Case is Controversial

1. **Political Motive**
    - The case is believed to be a **revenge** because Nand Kumar exposed corruption of Hastings.
2. **Bias of Judiciary**
    - Sir Elijah Impey was accused of being biased.
3. **Application of English Law**
    - Forgery was **not a capital offence under Indian law**, but under English law it was punishable by death.
4. **Denial of Fair Trial**
    - Many historians consider it a **judicial murder**.

Significance

- Shows the **defects of early British judicial system** in India.
- Highlights **conflict between English law and Indian conditions**.

- Raised questions about **judicial independence**.

CASE RAJA NAND KUMAR The Raja Nand Kumar case (1775) is a landmark case in Indian legal history. Nand Kumar accused Warren Hastings of corruption but was later charged with forgery. He was tried by the Supreme Court of Calcutta under Chief Justice Sir Elijah Impey and was sentenced to death. The case is widely criticized as a judicial murder due to political bias, application of English law, and lack of fair trial. It exposed the flaws of the early British judicial system in India.

राजा नंद कुमार केस (1775) भारतीय विधिक इतिहास का एक महत्वपूर्ण और विवादास्पद मामला है। नंद कुमार ने वॉरेन हेस्टिंग्स पर भ्रष्टाचार का आरोप लगाया, जिसके बाद उन पर जालसाजी का मुकदमा चलाया गया। कलकत्ता सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश सर एलिजा इम्पे ने उन्हें दोषी ठहराकर फांसी की सजा दी। इस मामले को न्यायिक हत्या माना जाता है क्योंकि इसमें पक्षपात, अंग्रेजी कानून का गलत प्रयोग और निष्पक्ष सुनवाई का अभाव था।

**********===============****************================***************===

DATE 18.3.26 TIME 10.30 AM PERIOD 2 Wednesday

CAPIAS WRIT / warrant?

Habeas Corpus you might have a body by order produce him.

***Capias Writ you take

Capias Writ *Capias* is a Latin term meaning 👉 **"That you take (the body)"**

A **Capias Writ** is a court order directing the police or officer to **arrest a person** and **bring him before the court**.

Nature of Capias Writ

- It is a **common law writ** (originated in English law).
- Used to **secure the presence of a defendant** in court.
- Usually issued when a person **fails to appear** after summons.

Types of Capias Writ **Capias ad respondendum (कैपियस ऐड रिस्पॉन्डेंडम)** यह एक लैटिन कानूनी शब्द है, जिसका अर्थ होता है— **"उत्तर देने के लिए व्यक्ति को गिरफ्तार करने का आदेश"**।

Capias ad respondendum वह न्यायालयी वारंट है जिसके द्वारा अदालत किसी व्यक्ति (प्रतिवादी) को **गिरफ्तार करके न्यायालय में प्रस्तुत करने का आदेश देती है**, ताकि वह अपने खिलाफ लगाए गए आरोपों का उत्तर दे सके।

विस्तृत व्याख्या:

- यह एक प्रकार का **सिविल वारंट (Civil Writ)** है।
- जब कोई प्रतिवादी बार-बार अदालत में उपस्थित नहीं होता या समन का पालन नहीं करता, तब अदालत यह वारंट जारी कर सकती है।

- इसका उद्देश्य सजा देना नहीं, बल्कि **व्यक्ति को अदालत में पेश कराना** होता है ताकि मुकदमे की कार्यवाही आगे बढ़ सके।

उदाहरण: यदि किसी व्यक्ति पर कर्ज का मामला चल रहा है और वह अदालत के समन के बावजूद उपस्थित नहीं होता, तो अदालत **Capias ad respondendum** जारी कर सकती है, जिससे पुलिस उसे पकड़कर अदालत में पेश करे।

Capias ad satisfaciendum (कैपियस ऐड सैटिसफैसिएन्डम) यह एक लैटिन कानूनी शब्द है, जिसका अर्थ होता है— **"निर्णय (डिक्री) की संतुष्टि के लिए व्यक्ति को गिरफ्तार करने का आदेश"**।

Capias ad satisfaciendum वह न्यायालयी वारंट है जिसके द्वारा अदालत किसी व्यक्ति (निर्णय-देय/जजमेंट डेब्टर) को **गिरफ्तार करने का आदेश देती है**, ताकि वह अदालत द्वारा दिए गए निर्णय (जैसे धनराशि का भुगतान) को पूरा करे।

विस्तृत व्याख्या:

- यह एक प्रकार का **निष्पादन वारंट (Execution Writ)** है।
- जब कोई व्यक्ति अदालत के आदेश के अनुसार **पैसे या दायित्व का पालन नहीं करता**, तब यह वारंट जारी किया जाता है।
- इसमें व्यक्ति को गिरफ्तार करके **तब तक हिरासत में रखा जा सकता है**, जब तक वह अपना दायित्व पूरा न कर दे या अदालत संतुष्ट न हो जाए।

उदाहरण: यदि किसी व्यक्ति पर अदालत ने 1 लाख रुपये देने का आदेश दिया है और वह भुगतान नहीं करता, तो अदालत उसके खिलाफ **Capias ad satisfaciendum** जारी कर सकती है, जिससे उसे गिरफ्तार कर भुगतान के लिए बाध्य किया जा सके।

मुख्य अंतर (पिछले से तुलना):

- **Capias ad respondendum** → अदालत में जवाब देने के लिए गिरफ्तारी
- **Capias ad satisfaciendum** → अदालत के निर्णय को पूरा कराने के लिए गिरफ्तारी

Capias ad audiendum judicium (कैपियस ऐड ऑडिएन्डम जुडीशियम) यह एक लैटिन कानूनी शब्द है, जिसका अर्थ होता है— **"निर्णय (जजमेंट) सुनने के लिए व्यक्ति को गिरफ्तार करने का आदेश"**।

Capias ad audiendum judicium वह न्यायालयी वारंट है जिसके द्वारा अदालत किसी व्यक्ति (आमतौर पर आरोपी) को **गिरफ्तार करके अदालत में प्रस्तुत करने का आदेश देती है**, ताकि वह अदालत का अंतिम निर्णय (Judgment) सुन सके।

विस्तृत व्याख्या: यह मुख्यतः **आपराधिक मामलों (Criminal Cases)** में प्रयोग होता है।

- जब आरोपी अदालत में उपस्थित नहीं होता, विशेषकर **निर्णय सुनाए जाने के समय**, तब यह वारंट जारी किया जा सकता है।
- इसका उद्देश्य है कि आरोपी अदालत में उपस्थित रहे और **सजा या आदेश सीधे सुन सके**।

उदाहरण: यदि किसी अपराध के मामले में सुनवाई पूरी हो चुकी है और अदालत निर्णय सुनाने वाली है, लेकिन आरोपी उपस्थित नहीं है, तो अदालत **Capias ad audiendum judicium** जारी कर सकती है, ताकि उसे गिरफ्तार कर निर्णय सुनाया जा सके।

संक्षेप में अंतर:

- **Capias ad respondendum** → जवाब देने के लिए गिरफ्तारी
- **Capias ad satisfaciendum** → निर्णय लागू कराने (भुगतान/पालन) के लिए गिरफ्तारी
- **Capias ad audiendum judicium** → निर्णय सुनने के लिए गिरफ्तारी

Position in India

- The exact term *Capias Writ* is **not commonly used** in modern Indian law.
- Its functions are performed through:
    - **Arrest warrants** under the Code of Criminal Procedure, 1973
    - Civil arrest provisions under the Code of Civil Procedure, 1908

Purpose

- To ensure **appearance of the accused/defendant**
- To enforce **court orders or judgments**

Difference from Habeas Corpus

- **Capias Writ** → Orders **arrest and production** of a person
- **Habeas Corpus** → Protects a person from **illegal detention**

Capias writ is a common law writ directing the arrest of a person to ensure his presence before the court. It is generally issued when a defendant fails to appear or to satisfy a judgment. Though not used by name in India, its functions are performed through arrest warrants under the Code of Criminal Procedure and provisions of civil arrest under the Code of Civil Procedure. It plays an important role in enforcing judicial authority.

कैपियस रिट एक सामान्य विधि (Common Law) की रिट है, जिसका अर्थ है "शरीर को पकड़कर लाना।" यह रिट न्यायालय द्वारा किसी व्यक्ति को गिरफ्तार कर अदालत के सामने प्रस्तुत करने के लिए जारी की जाती है। यह आमतौर पर तब जारी होती है जब कोई व्यक्ति अदालत में उपस्थित नहीं होता। भारत में इसका नाम सीधे उपयोग नहीं होता, लेकिन इसके कार्य सीआरपीसी और सीपीसी के तहत गिरफ्तारी वारंट द्वारा किए जाते हैं।

---

case * *

Munny Begum Bribery Case

Background

- Munny Begum was a powerful woman in **Murshidabad (Bengal)**.
- After the death of Nawab Mir Jafar, there was a struggle for control over the **Nawab's household and administration**.

Allegation of Bribery

- Munny Begum allegedly **paid a large sum of money (bribe)** to Warren Hastings
- In return, she was **appointed as guardian (Munshi/manager)** of the young Nawab and gained control over the **Nawab's treasury and affairs**.

Legal/Political Issue

- The matter became a **major corruption scandal** during British rule.
- It was later raised in proceedings against Warren Hastings, including his **impeachment in the British Parliament**.

Connection with Impeachment

- The bribery allegations formed part of the charges in the famous impeachment led by Edmund Burke
- Hastings was accused of:
    - Accepting **illegal gifts/bribes**
    - Misusing his official position

Significance in Legal History

1. Shows **corruption in early East India Company administration**
2. Highlights **lack of accountability** of British officials in India
3. Led to demand for **legal and administrative reforms**
4. Important example used in **Hastings' impeachment trial**

The Munny Begum bribery case is an important episode in Indian legal history. Munny Begum of Murshidabad allegedly paid a large bribe to Warren Hastings to secure her appointment as guardian of the Nawab. This incident became a major charge in the impeachment proceedings against Hastings in the British Parliament. It exposed corruption and misuse of power by East India Company officials and highlighted the need for administrative reforms.

मुन्नी बेगम रिश्वत कांड भारतीय विधिक इतिहास का एक महत्वपूर्ण मामला है। मुन्नी बेगम ने वॉरेन हेस्टिंग्स को रिश्वत देकर नवाब के संरक्षक पद को प्राप्त किया। यह मामला बाद में हेस्टिंग्स के महाभियोग में प्रमुख आरोप बना। इसने ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारियों में भ्रष्टाचार और शक्ति के दुरुपयोग को उजागर किया और सुधारों की आवश्यकता को दर्शाया।

case** **Kamal-ud-Din Case**

Background

- Kamal-ud-Din (often written as *Kammrudeen*) was an Indian who **filed a complaint of corruption** against Warren Hastings.
- This happened during the period when the **East India Company officials were often accused of bribery and misuse of power**.

Main Issue

- Kamal-ud-Din alleged that **Hastings had accepted bribes and acted corruptly**.
- However, instead of properly investigating the complaint, **pressure was allegedly put on the complainant**.

What Happened

- The complaint was **withdrawn under influence/pressure**.
- It was later argued that:
    - The administration tried to **suppress allegations of corruption**
    - There was **no fair and independent inquiry**

Legal Significance

1. Shows **lack of judicial independence** in early British India
2. Reflects **corruption in East India Company administration**
3. Became part of the broader criticism of Warren Hastings during his **impeachment proceedings in England**
4. Demonstrates how **complainants had little protection**

Related Cases (Very Important for Exams)

- Raja Nand Kumar Case
- Munny Begum Bribery Case

👉 All these cases together show **corruption and misuse of judicial power** in early British rule.

The Kamal-ud-Din case is an important episode in Indian legal history. Kamal-ud-Din accused Warren Hastings of corruption and bribery. However, the complaint was allegedly withdrawn under pressure, and no fair inquiry was conducted. The case highlights the lack of judicial independence and prevalence of corruption in the East India Company administration. It later became part of the criticism against Hastings during his impeachment.

कमालुद्दीन केस भारतीय विधिक इतिहास का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। इसमें कमालुद्दीन ने वॉरेन हेस्टिंग्स पर भ्रष्टाचार का आरोप लगाया, लेकिन यह शिकायत दबाव में वापस ले ली गई। इस मामले ने ईस्ट इंडिया कंपनी के

प्रशासन में भ्रष्टाचार और न्यायिक स्वतंत्रता के अभाव को उजागर किया। यह मामला हेस्टिंग्स के महाभियोग में भी महत्वपूर्ण बना।

---

pit india act 1784 **Act of Settlement 1781** (Also known as the **Amending Act of 1781**)

Background

- The **Regulating Act 1773** created the Supreme Court of Calcutta.
- But conflicts arose between:
  - The **Supreme Court**
  - The **Governor-General and Council**
- Cases like:
  - Raja Nand Kumar Case
  - Kamal-ud-Din Case
    exposed confusion and misuse of powers.

👉 To remove these defects, the **Act of Settlement 1781** was passed.

Objectives

1. To **remove defects** of the Regulating Act 1773
2. To **define powers** of the Supreme Court
3. To reduce **conflict between judiciary and executive**

Main Provisions

1. Jurisdiction Limited

- Supreme Court's jurisdiction was **restricted to Calcutta only**
- It could not interfere in **revenue matters**

2. Protection to Officials

- Governor-General and Council were **not answerable to Supreme Court** for official acts

3. Personal Laws Recognized

- Hindus → governed by **Hindu law**
- Muslims → governed by **Muslim law**

4. No Interference in Revenue

- Court could not interfere with **revenue collection and administration**

5. Appeal System

- Appeals from Supreme Court could go to the **King-in-Council (Privy Council)**

Significance

1. Reduced **conflict between court and executive**
2. Recognized **Indian personal laws**
3. Limited misuse of judicial power
4. Strengthened **administrative stability**

The Act of Settlement 1781 was passed to remove the defects of the Regulating Act 1773. It clearly defined the jurisdiction of the Supreme Court of Calcutta and restricted it mainly to Calcutta. It protected the Governor-General and Council from judicial interference in official matters and excluded revenue matters from the court's jurisdiction. It also recognized Hindu and Muslim personal laws. The Act played an important role in reducing conflicts between the judiciary and executive and brought clarity in administration.

1781 का एक्ट ऑफ सेटलमेंट, 1773 के रेगुलेटिंग एक्ट की कमियों को दूर करने के लिए बनाया गया था। इसने कलकत्ता सुप्रीम कोर्ट के अधिकार क्षेत्र को सीमित किया और उसे मुख्यतः कलकत्ता तक ही रखा। गवर्नर जनरल और काउंसिल को उनके आधिकारिक कार्यों के लिए न्यायालय के हस्तक्षेप से मुक्त किया गया तथा राजस्व मामलों को न्यायालय के अधिकार क्षेत्र से बाहर रखा गया। इसने हिंदू और मुस्लिम व्यक्तिगत कानूनों को भी मान्यता दी। यह अधिनियम न्यायपालिका और कार्यपालिका के बीच संघर्ष को कम करने में महत्वपूर्ण रहा।

"Which committee recommended Act of Settlement 1781?"

Answer:
No committee recommended it. It was enacted by the British Parliament to remove defects of the Regulating Act 1773 and resolve conflicts between judiciary and executive.

There was no committee behind the Act of Settlement 1781. It was passed by the British Parliament to remove defects of the Regulating Act 1773 and to resolve conflicts between the Supreme Court of Calcutta and the Governor-General in Council.

1781 के एक्ट ऑफ सेटलमेंट के पीछे कोई समिति नहीं थी। इसे ब्रिटिश संसद ने 1773 के रेगुलेटिंग एक्ट की कमियों को दूर करने और न्यायपालिका व कार्यपालिका के बीच संघर्ष को समाप्त करने के लिए पारित किया था।

**************===============**************====================*************

date 23.3.26 Monday 10.30 am period 2

main provision of act of settlement 1781 governor general and all members of his council got free from the jurisdiction of supreme court and they could not held guilty for there administrative action.

not suit can be initiate against them for their actions.

# all revenue related right of supreme court became subject to seize.

case Panimani Dasi v. Banerjee (This case is often cited in **procedural law** discussions, especially relating to **caveat and right to be heard**.)

Background

- The dispute was between **Panimani Dasi** and **Banerjee**.

- One party **approached the court for relief**, while the other party **was not given proper opportunity of hearing**.

Legal Issue 👉 Whether a court can pass an **order without hearing the affected party**, especially when that party has taken steps to be heard (like filing a caveat or appearing).

Judgment / Decision

- The court emphasized that:
  - **No order should be passed without giving an opportunity of hearing** to the concerned party.
  - Passing an order without hearing violates the principle of **natural justice**.

Legal Principle Established

🔹 **Audi Alteram Partem**

- Meaning: **“Hear the other side”**
- It is a fundamental rule of natural justice.

👉 The case reinforces that:

- Even interim or urgent orders should **not ignore the right to be heard**.

Connection with Caveat

- This principle later got statutory recognition in:
  - Section 148A of the Code of Civil Procedure, 1908
- Ensures that **no ex parte order is passed** without notice to the caveator.

Significance

1. Strengthens **natural justice principles**
2. Protects parties from **ex parte orders**
3. Supports development of **caveat provisions**
4. Ensures **fair trial**

In Panimani Dasi v. Banerjee, the court held that no order should be passed without giving an opportunity of hearing to the affected party. The case emphasized the principle of natural justice, particularly audi alteram partem. It laid the foundation for procedural fairness and later influenced provisions like caveat under Section 148A CPC.

Panimani Dasi v. Banerjee मामले में न्यायालय ने कहा कि किसी भी पक्ष को सुने बिना आदेश पारित नहीं किया जाना चाहिए। यह प्राकृतिक न्याय के सिद्धांत “Audi Alteram Partem” (दूसरे पक्ष को भी सुनो) पर आधारित है। इस निर्णय ने निष्पक्ष सुनवाई के सिद्धांत को मजबूत किया और बाद में सीपीसी की धारा 148A (कवियट) को प्रभावित किया।

******vvip ⚖️ Abstain and Refrain**

Meaning

- **Abstain** → to **stay away from doing something**
- **Refrain** → to **stop yourself from doing something**

👉 Together, **“abstain and refrain”** means: **A legal order directing a person to NOT do a particular act.**

Legal Use

- Commonly used in:
  - **Court orders / injunctions**
  - **Notices and legal warnings**
- Example:
  👉 “The defendant is ordered to abstain and refrain from interfering with the plaintiff’s property.”

Related Concept

- Closely connected with **Injunction**
- Especially **temporary or permanent injunctions** under:
  - Code of Civil Procedure, 1908

Purpose

- To **prevent harm or illegal action**
- To **maintain status quo**
- To protect **legal rights of a party**

“Abstain and refrain” is a legal expression used in court orders directing a person to avoid or stop doing a particular act. It is commonly used in injunctions to prevent interference with rights or property.

“Abstain and refrain” का अर्थ है किसी कार्य को करने से बचना या उसे रोकना। यह शब्द प्रायः न्यायालय के आदेशों (injunction) में प्रयोग होता है, जहां किसी व्यक्ति को किसी कार्य को करने से रोका जाता है।

French Revolution The **French Revolution (1789–1799)** was a major political and social upheaval in France that **overthrew monarchy, ended feudal privileges, and established principles of liberty and equality**.

1. Social Inequality

- Society divided into **Three Estates**:
  1. Clergy (First Estate)
  2. Nobility (Second Estate)
  3. Common people (Third Estate)

- Third Estate had **heavy taxes but no political power**

2. Economic Crisis

- France was **bankrupt** due to wars and royal spending
- Heavy taxation burden on common people

3. Weak Leadership

- Louis XVI was unable to manage the crisis
- Extravagance of Marie Antoinette worsened public anger

4. Influence of Ideas

- Enlightenment thinkers like:
  - Jean-Jacques Rousseau
  - Voltaire
- Promoted ideas of **freedom, equality, and rights**

Major Events

1. 1789 – Estates-General Meeting

- Third Estate demanded **equal representation**

2. Tennis Court Oath

- Third Estate formed **National Assembly**

3. Storming of Bastille (14 July 1789)

- Symbol of **end of royal tyranny**

4. Reign of Terror (1793–1794)

- Led by Maximilien Robespierre
- Thousands executed

5. Rise of Napoleon

- Napoleon Bonaparte took power in 1799
- Marked end of revolution

Important Document

- **Declaration of the Rights of Man and of the Citizen**
  - Guaranteed **freedom, equality, and rights**

Results / Impact

1. End of **absolute monarchy**
2. Rise of **democracy and republic ideas**

3. Abolition of **feudal system**
4. Spread of **liberty, equality, fraternity**
5. Inspired revolutions worldwide

The French Revolution (1789) was a significant event that led to the end of monarchy and establishment of democratic principles in France. It was caused by social inequality, economic crisis, weak leadership, and influence of Enlightenment ideas. Key events included the storming of Bastille and the Reign of Terror. The revolution resulted in the abolition of feudalism and promoted ideals of liberty, equality, and fraternity.

फ्रांसीसी क्रांति (1789) एक महत्वपूर्ण घटना थी, जिसने राजशाही का अंत कर लोकतांत्रिक सिद्धांतों की स्थापना की। इसके कारण सामाजिक असमानता, आर्थिक संकट, कमजोर नेतृत्व और प्रबोधन विचार थे। बैस्टिल का पतन और आतंक का शासन इसके प्रमुख घटनाएं थीं। इस क्रांति ने सामंतवाद को समाप्त किया और स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के आदर्शों को बढ़ावा दिया।

---

question Contribution of Lord Cornwallis to Adalat System

Lord Cornwallis made significant contributions to the development of the **Adalat (judicial) system in India** through the **Cornwallis Code (1793)**. His reforms aimed at establishing an efficient, impartial, and structured judicial system.

Key Contributions:

1. **Separation of Judiciary and Executive**
   - Revenue officers were separated from judicial functions to ensure **fair justice**.
2. **Hierarchy of Courts Established**
   - Created a proper system:
     - Munsif Courts (lowest level)
     - District Diwani Adalats
     - Sadar Diwani Adalat (highest civil court)
3. **Reforms in Criminal Courts**
   - Established **Circuit Courts** and
   - Sadar Nizamat Adalat for criminal justice.
4. **Introduction of Rule of Law**
   - All persons, including officials, were made **subject to law**.
5. **Exclusion of Indians from Higher Posts**
   - Higher judicial posts were reserved for **Europeans**, which led to criticism.

Conclusion: Cornwallis laid the **foundation of modern judicial administration in India**, though his system had limitations like racial discrimination.

लॉर्ड कॉर्नवालिस ने भारत में **अदालत प्रणाली** (**Adalat System)** के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके सुधार **कॉर्नवालिस कोड** (**1793)** के माध्यम से लागू हुए।

मुख्य योगदान:

- **न्यायपालिका और कार्यपालिका का पृथक्करण** न्याय को निष्पक्ष बनाने के लिए दोनों को अलग किया गया।
- **अदालतों की श्रेणीबद्ध व्यवस्था** मुंसिफ कोर्ट → जिला दीवानी अदालत → सदर दीवानी अदालत
- **फौजदारी न्याय सुधार** सर्किट कोर्ट और सदर निजामत अदालत की स्थापना
- **कानून का शासन** (**Rule of Law)** सभी व्यक्तियों को कानून के अधीन किया गया
- **उच्च पदों पर अंग्रेजों की नियुक्ति** भारतीयों को उच्च न्यायिक पदों से दूर रखा गया

निष्कर्ष: कॉर्नवालिस ने भारत में आधुनिक न्यायिक प्रणाली की नींव रखी, लेकिन उनकी व्यवस्था में **भेदभाव** भी था।

Code of Regulation – 8 June 1787 (Cornwallis Judicial Plan) The **Code of Regulation of 8 June 1787** was introduced by Lord Cornwallis to reorganize and improve the **Adalat (judicial) system** in British India.

Background Before 1787, the judicial system introduced by Warren Hastings had several defects like confusion of powers and lack of efficiency. To remove these defects, Cornwallis introduced the **Code of Regulation (1787)**.

Main Provisions

- **Combination of Executive and Judicial Powers** District Collector was given both **revenue and judicial powers**.
- **Collector as Judge** The Collector acted as **Diwani Judge** in civil cases.
- **Control over Criminal Justice** Criminal courts (Nizamat) were supervised more effectively.
- **Appeal System** Appeals from lower courts could go to higher courts.
- **Company's Control Strengthened** British administration gained **more centralized control** over justice.

Defects

- Too much power in hands of **Collector**
- Lack of **judicial independence**
- Led to further reforms in **1790 & 1793 (Cornwallis Code)**

Conclusion The Code of 1787 was an **initial step in judicial reform**, but its defects led to later improvements and the establishment of a more **independent judiciary**.

पृष्ठभूमि 1787 से पहले वॉरेन हेस्टिंग्स द्वारा स्थापित न्यायिक प्रणाली में कई कमियां थीं। इन्हें दूर करने के लिए लॉर्ड कॉर्नवालिस ने 8 जून 1787 को यह विनियम लागू किया।

मुख्य प्रावधान

- **कार्यपालिका और न्यायपालिका का मिश्रण** कलेक्टर को प्रशासनिक और न्यायिक दोनों शक्तियाँ दी गईं।
- **कलेक्टर न्यायाधीश बना** सिविल मामलों में कलेक्टर ही न्यायाधीश था।
- **फौजदारी व्यवस्था पर नियंत्रण** आपराधिक न्याय प्रणाली को मजबूत किया गया।
- **अपील की व्यवस्था** निचली अदालतों से उच्च अदालतों में अपील संभव थी।
- **कंपनी का नियंत्रण बढ़ा** न्याय प्रणाली पर अंग्रेजों का नियंत्रण मजबूत हुआ।

दोष

- कलेक्टर के हाथ में अधिक शक्ति
- न्यायपालिका की स्वतंत्रता का अभाव
- आगे चलकर 1793 में सुधार की आवश्यकता पड़ी

निष्कर्ष 1787 का विनियम न्यायिक सुधार की शुरुआत था, जिसने आगे चलकर एक बेहतर और स्वतंत्र न्याय प्रणाली की नींव रखी।

The **Code of Judicial Regulation (27 June 1787)** was introduced under Lord Cornwallis as part of early reforms to reorganize the **Adalat (judicial) system** in British India.

Background The earlier judicial system set up by Warren Hastings had defects such as confusion of powers and inefficiency. To improve administration, Cornwallis introduced judicial regulations in **June 1787**.

Main Provisions

1. **District Collector as Judge**
   - The Collector was made the **Diwani (civil) judge** in districts.
2. **Combination of Powers**
   - Judicial and executive powers were **combined in one authority**.
3. **Reorganization of Civil Courts**
   - Strengthened **Diwani Adalats** at district level.
4. **Appeal System**

  - Appeals could be made to higher courts like **Sadar Diwani Adalat**.

5. **Control over Criminal Courts**
  - Criminal justice system (Nizamat Adalat) was better supervised.

Defects

- No **separation of judiciary and executive**
- Excess power in hands of Collector
- Lack of judicial independence

Conclusion The 1787 Judicial Regulation was an **initial reform step**, but due to its defects, further reforms were introduced later in **1790 and 1793 (Cornwallis Code)** to establish a more independent judiciary.

पृष्ठभूमि वॉरेन हेस्टिंग्स द्वारा स्थापित न्यायिक व्यवस्था में कई कमियां थीं। इन्हें सुधारने के लिए लॉर्ड कॉर्नवालिस ने जून 1787 में न्यायिक विनियम लागू किए।

मुख्य प्रावधान

1. **कलेक्टर को न्यायाधीश बनाना**
  - जिला स्तर पर कलेक्टर को दीवानी न्यायाधीश बनाया गया।
2. **शक्तियों का संयोग**
  - कार्यपालिका और न्यायपालिका की शक्तियाँ एक ही व्यक्ति में थीं।
3. **दीवानी अदालतों का पुनर्गठन**
  - जिला दीवानी अदालतों को मजबूत किया गया।
4. **अपील की व्यवस्था**
  - उच्च अदालत (सदर दीवानी अदालत) में अपील की व्यवस्था।
5. **फौजदारी न्याय पर नियंत्रण**
  - निजामत अदालत की व्यवस्था को बेहतर किया गया।

दोष

- न्यायपालिका की स्वतंत्रता का अभाव
- कलेक्टर के हाथ में अधिक शक्ति
- निष्पक्ष न्याय में कमी

निष्कर्ष 1787 का यह न्यायिक विनियम सुधार की शुरुआत था, लेकिन इसकी कमियों के कारण आगे चलकर 1793 में व्यापक सुधार किए गए।

*******==========************================****************============*****

date 24-3-26 Tuesday time 10.30 am period 3

Judicial Plan of 1787 (Cornwallis Plan) The **Judicial Plan of 1787** was introduced by Lord Cornwallis to reorganize the **Adalat (judicial) system** in British India.

Background The judicial system established by Warren Hastings had several defects like confusion of powers and inefficiency. To improve administration, Cornwallis introduced the **Judicial Plan of 1787**.

Main Features

1. **Collector as Judge**
    - The District Collector was made **Diwani (civil) judge**.
2. **Combination of Powers**
    - Judicial and executive powers were **combined in one authority**.
3. **Reorganization of Courts**
    - Strengthened **District Diwani Adalats**.
4. **Appeal System**
    - Appeals lay to the **Sadar Diwani Adalat** (highest civil court).
5. **Control over Criminal Justice**
    - Criminal courts (Nizamat Adalat) were placed under better supervision.

Defects

- No **separation of judiciary and executive**
- Excessive power in hands of Collector
- Lack of judicial independence

Conclusion The Judicial Plan of 1787 was an **initial step towards reform**, but due to its defects, further improvements were made in **1790 and 1793 (Cornwallis Code)**, which established a more independent judicial system.

पृष्ठभूमि वॉरेन हेस्टिंग्स द्वारा स्थापित न्यायिक व्यवस्था में कई कमियां थीं। इन्हें दूर करने के लिए लॉर्ड कॉर्नवालिस ने 1787 में न्यायिक योजना लागू की।

मुख्य विशेषताएं

1. **कलेक्टर को न्यायाधीश बनाना**
    - जिला कलेक्टर को दीवानी न्यायाधीश बनाया गया।

2. **शक्तियों का संयोजन**
    - न्यायपालिका और कार्यपालिका की शक्तियाँ एक ही व्यक्ति में थीं।
3. **अदालतों का पुनर्गठन**
    - जिला दीवानी अदालतों को मजबूत किया गया।
4. **अपील की व्यवस्था**
    - सदर दीवानी अदालत में अपील की व्यवस्था।
5. **फौजदारी न्याय पर नियंत्रण**
    - निजामत अदालत की व्यवस्था में सुधार किया गया।

दोष

- न्यायपालिका की स्वतंत्रता का अभाव
- कलेक्टर के हाथ में अत्यधिक शक्ति
- निष्पक्ष न्याय में कमी

निष्कर्ष 1787 की न्यायिक योजना सुधार की शुरुआत थी, लेकिन इसकी कमियों के कारण 1793 में व्यापक सुधार किए गए, जिससे एक स्वतंत्र न्याय प्रणाली विकसित हुई।

what is the meaning of pecuniary jurisdiction?

Pecuniary Jurisdiction Meaning

Pecuniary jurisdiction means the **financial (monetary) limit** within which a court has the power to hear and decide a case. 👉 In simple words: It tells **how much money value of a case a particular court can handle**.

Explanation

- Every court is given a **maximum money limit**.
- A case must be filed in the court **according to its value**.
- If the value exceeds the limit, the case goes to a **higher court**.

Example

- If a court can hear cases up to **₹10 lakh**,
    - A case of ₹5 lakh → filed there ✅
    - A case of ₹50 lakh → filed in higher court ❌

Legal Basis

- Governed under provisions of the Code of Civil Procedure, 1908

Purpose

1. Proper **distribution of cases**
2. Avoid overburdening higher courts
3. Ensure **efficient justice system**

Pecuniary jurisdiction refers to the monetary limits within which a court can entertain and decide a case. It determines which court will hear a case based on its financial value. It helps in proper distribution of cases and ensures efficient administration of justice.

आर्थिक अधिकार क्षेत्र (Pecuniary Jurisdiction) का अर्थ है वह धनराशि की सीमा जिसके भीतर कोई न्यायालय किसी मामले की सुनवाई कर सकता है। यह निर्धारित करता है कि किसी मामले को उसकी कीमत के अनुसार किस न्यायालय में दायर किया जाएगा।

************==============*************===================***************

date 25-3-26 Wednesday 10.30 am period 2

The **Judicial Plans (Judicial Reforms) of Lord William Bentinck (1828–1835)** are very important in Indian legal history. His aim was to make justice **cheap, speedy, and accessible**, and to remove defects of the earlier system of Lord Cornwallis.

Judicial Plans of Lord William Bentinck

1. Abolition of Circuit Courts

- Bentinck **abolished the Circuit Courts** established earlier.
- These courts had **large jurisdictions** and caused delays in justice.
- Their work was transferred to **District Judges and Magistrates**.

👉 Result: Faster disposal of criminal cases.

2. Abolition of Provincial Courts of Appeal

- The **Provincial Courts of Appeal** were removed.
- These courts were slow and created **huge arrears of cases**.

👉 Result: Reduced delay and simplified judicial structure.

3. Strengthening of District Courts

- Powers of **District and Sessions Judges** were increased.
- They were given authority over both **civil and criminal cases**.

👉 Result: Justice became more localized and efficient.

---

4. Appointment of Indians in Judiciary

- Indians were appointed as **Sadr Ameens, Munsifs, and subordinate judges**.
- Their salaries and status were improved.

👉 Result: Beginning of **Indian participation in judiciary**.

5. Establishment of Sadar Courts at Allahabad

- **Sadar Diwani Adalat (civil)** and
- **Sadar Nizamat Adalat (criminal)** were established at Allahabad.

👉 Result: Better administration in North-Western Provinces.

6. Use of Local Language in Courts

- Persian was replaced by **English (higher courts)** and **vernacular languages (lower courts)**.

👉 Result: Proceedings became easier for common people.

7. Transfer of Powers to Collectors

- **Collectors were given civil and revenue powers**.
- Helped in combining administrative and judicial efficiency.

8. Removal of Defective Judicial System of 1793

- Bentinck criticized the old system as inefficient and corrupt.
- Reorganized the entire judicial machinery for **speed and economy**.

Lord William Bentinck's judicial plan marked a **turning point in British Indian judiciary**. He simplified the court system, reduced delays, encouraged Indian participation, and made justice more Accessible. His reforms laid the foundation for later developments like the **Law Commission (1834)** and codification of laws.

📌 **Short Answer (for revision)**

- Abolished Circuit Courts
- Abolished Provincial Courts of Appeal
- Strengthened District Courts
- Appointed Indians as judges
- Introduced vernacular language
- Established Sadar Courts at Allahabad

लॉर्ड विलियम बेंटिंक की न्यायिक योजनाएँ (1828–1835) Lord William Bentinck ने भारतीय न्याय व्यवस्था में महत्वपूर्ण सुधार किए। उनका मुख्य उद्देश्य था—**सस्ता, शीघ्र और सुलभ न्याय प्रदान करना** तथा पूर्ववर्ती दोषपूर्ण व्यवस्था को सुधारना।

1. सर्किट कोर्ट (Circuit Courts) का उन्मूलन

- बेंटिंक ने सर्किट कोर्ट समाप्त कर दिए।
- ये न्यायालय बहुत बड़े क्षेत्र में काम करते थे, जिससे मामलों में **अत्यधिक विलंब** होता था।
  👉 परिणाम: मामलों का निपटारा तेज हुआ।

2. प्रांतीय अपील न्यायालयों (Provincial Courts of Appeal) का उन्मूलन

- इन न्यायालयों को भी समाप्त कर दिया गया।
- इनसे न्याय प्रक्रिया जटिल और धीमी हो गई थी। 👉 परिणाम: न्यायिक प्रणाली सरल बनी।

3. जिला न्यायालयों को सशक्त बनाना

- जिला एवं सत्र न्यायाधीशों की शक्तियाँ बढ़ाई गईं।
- उन्हें **दीवानी** (**Civil**) **और फौजदारी** (**Criminal**) दोनों मामलों की सुनवाई का अधिकार दिया गया।
  👉 परिणाम: स्थानीय स्तर पर न्याय सुलभ हुआ।

4. भारतीयों की नियुक्ति

- भारतीयों को **मुंसिफ, सदर अमीन आदि पदों** पर नियुक्त किया गया।
- उनकी स्थिति और वेतन में सुधार किया गया। 👉 परिणाम: न्याय व्यवस्था में भारतीयों की भागीदारी बढ़ी।

5. इलाहाबाद में सदर अदालतों की स्थापना

- **सदर दीवानी अदालत** (**Sadar Diwani Adalat**) – दीवानी मामलों के लिए
- **सदर निजामत अदालत** (**Sadar Nizamat Adalat**) – फौजदारी मामलों के लिए 👉 परिणाम: उत्तर-पश्चिमी प्रांतों में न्यायिक व्यवस्था मजबूत हुई।

6. स्थानीय भाषा का प्रयोग

- फारसी भाषा को हटाकर
  - उच्च न्यायालयों में **अंग्रेज़ी**
  - निम्न न्यायालयों में **स्थानीय भाषाएँ** (**वर्नाक्युलर**) लागू की गईं। 👉 परिणाम: आम जनता के लिए न्याय समझना आसान हुआ।

7. कलेक्टर को न्यायिक अधिकार

- कलेक्टरों को **राजस्व और दीवानी अधिकार** दिए गए।
  👉 परिणाम: प्रशासन और न्याय में समन्वय बढ़ा।

8. 1793 की दोषपूर्ण व्यवस्था का सुधार

- पूर्व की व्यवस्था (Lord Cornwallis द्वारा स्थापित) को अव्यवहारिक माना गया।
- बेंटिंक ने इसे सरल, सस्ता और प्रभावी बनाया।

निष्कर्ष लॉर्ड विलियम बेंटिंक की न्यायिक योजनाओं ने भारतीय न्याय प्रणाली को **सरल, सस्ती और त्वरित** बनाया। उन्होंने न्यायालयों की संख्या घटाई, भारतीयों को अवसर दिया और न्याय को जनता के निकट लाया। उनके सुधार आगे चलकर **कानूनों के संहिताकरण (Codification)** की नींव बने।

📌 **संक्षेप (Short Points)**

- सर्किट कोर्ट समाप्त
- प्रांतीय अपील न्यायालय समाप्त
- जिला न्यायालय सशक्त
- भारतीयों की नियुक्ति
- इलाहाबाद में सदर अदालतें
- स्थानीय भाषा का प्रयोग

**Indian judicial reform start by warren hasting start 0-10 steps

than lord crown wolis work on that	10-20 steps
after that lord willian bentinik 1828 to 1835	20-50 steps

भारतीय न्यायिक सुधार (Step-wise Development)

◇ 0–10 Steps: वारेन हेस्टिंग्स (1772–1785)

👉 भारतीय न्यायिक सुधार की शुरुआत

1. 1772 का पहला **Judicial Plan** लागू किया।
2. हर जिले में **Diwani Adalat (दीवानी अदालत)** स्थापित।
3. हर जिले में **Faujdari Adalat (फौजदारी अदालत)** स्थापित।
4. दीवानी अदालत में **Collector** को न्यायाधीश बनाया।
5. फौजदारी अदालत में **क़ाज़ी और मुफ्ती** की सहायता ली गई।

6. हिंदू मामलों में **हिंदू कानून**, मुस्लिम मामलों में **मुस्लिम कानून** लागू।
7. कलकत्ता में **Sadar Diwani Adalat** (अपील के लिए) बनाई।
8. **Sadar Nizamat Adalat** (फौजदारी अपील) बनाई।
9. 1774 में **Supreme Court of Calcutta** की स्थापना।
10. 1781 Act द्वारा Supreme Court और Company Courts के अधिकार स्पष्ट किए।

👉 Result: न्याय प्रणाली की **नींव रखी गई**, लेकिन dual system से conflict हुआ।

◇ 10–20 Steps: लॉर्ड कॉर्नवालिस (1786–1793)

👉 न्यायिक प्रणाली का सुधार और व्यवस्थित रूप

11. 1793 में **Cornwallis Code** लागू।
12. **Separation of Powers** – प्रशासन और न्याय अलग किया।
13. Collector से न्यायिक शक्ति छीन ली।
14. जिला स्तर पर **District Judge** नियुक्त।
15. **Provincial Courts of Appeal** स्थापित किए।
16. Circuit Courts बनाए (फौजदारी मामलों के लिए)।
17. न्यायिक पदों पर केवल **यूरोपियनों की नियुक्ति**।
18. न्यायाधीशों के लिए **उच्च वेतन**, भ्रष्टाचार रोकने हेतु।
19. कानून को अधिक **लिखित और नियमित (codified)** किया।
20. न्यायिक प्रक्रिया को औपचारिक और सख्त बनाया।

👉 Result: न्याय व्यवस्था **संगठित और पेशेवर** बनी, लेकिन महंगी और जटिल हो गई।

🔹 20–50 Steps: लॉर्ड विलियम बेंटिंक (1828–1835)

👉 न्यायिक व्यवस्था को सरल, सस्ता और व्यावहारिक बनाना

21. Circuit Courts को समाप्त किया।
22. Provincial Courts of Appeal समाप्त किए।

23. District Judges को अधिक शक्ति दी।
24. न्यायिक प्रणाली को **सरल** (**simplified)** किया।
25. **भारतीयों को न्यायिक पदों पर नियुक्ति** (Munsif, Sadar Ameen)।
26. उनके वेतन और स्थिति में सुधार।
27. इलाहाबाद में **Sadar Diwani Adalat** स्थापित।
28. इलाहाबाद में **Sadar Nizamat Adalat** स्थापित।
29. उत्तर-पश्चिमी प्रांतों में न्याय व्यवस्था विकसित।
30. **फारसी भाषा समाप्त**, अंग्रेज़ी और स्थानीय भाषा लागू।
31. निचली अदालतों में **vernacular language** का उपयोग।
32. मामलों के निपटारे को तेज किया।
33. न्याय सस्ता और सुलभ बनाया।
34. Collector को कुछ न्यायिक अधिकार वापस दिए।
35. न्यायिक खर्च कम किया।
36. लंबित मामलों (arrears) को कम किया।
37. न्यायिक अधिकारियों की संख्या बढ़ाई।
38. ग्रामीण स्तर तक न्याय पहुंचाया।
39. प्रशासन और न्याय में संतुलन बनाया।
40. भ्रष्टाचार कम करने का प्रयास।
41. न्यायिक प्रक्रिया को practical बनाया।
42. जनता के लिए न्याय समझना आसान किया।
43. कठोर formal system को flexible बनाया।
44. Indian participation को बढ़ावा दिया।
45. भविष्य के **Law Commission (1834)** की नींव रखी।
46. codification की दिशा में कदम।
47. न्याय को केंद्रीकृत से विकेंद्रीकृत किया।

48. Company rule को मजबूत किया।
49. न्यायिक व्यवस्था को modern बनाया।
50. पूरी प्रणाली को **efficient और accessible** बनाया।

👉 Result: न्याय व्यवस्था **जनता के करीब, सस्ती और प्रभावी** बनी।

Final Conclusion (Exam Ready)

- **वारेन हेस्टिंग्स** → न्याय प्रणाली की शुरुआत
- **कॉर्नवालिस** → उसे व्यवस्थित और professional बनाया
- **बेंटिंक** → उसे सरल, सस्ता और जनहितकारी बनाया

👉 इस तरह भारतीय न्यायिक सुधार एक **continuous evolution (लगातार विकास**) की प्रक्रिया रही।

1831 civil administration reforms

cpc sect 9 suits of civil nature

1 jan 1832 north india start sadar diwani and sadar nijamat.

in sadar ammean it can solve up to rs 1000/- matter. how many sadar ammean it decided by governor general. in principle sadar ammean it can solve up to rs 5000/- matter. how many principle sadar ammean it decided by governor general.

***subject matter jurisdiction.

*******==========**********============**********=========*******==========

date 30.3.26 time 10.30 am Monday period 2

the india high courts

supreme court of judicature at Calcutta 1774

madras 1801

Bombay 1823

before this all three area used to get govern by mayour courts.

dual judicial system given below.

supreme court and sadar Adalat.

Mayor's Court और Supreme Court (British India)

यह दोनों न्यायालय ब्रिटिश काल में स्थापित हुए, लेकिन इनके **समय, संरचना और अधिकार अलग-अलग थे**।

◆ **Mayor's Court क्या है?** **Mayor's Court** की स्थापना **Charter of 1726** के तहत हुई थी।

मुख्य विशेषताएँ:

- यह अदालत **मद्रास, बॉम्बे और कलकत्ता** में स्थापित की गई।
- इसमें एक **Mayor (मेयर)** और कुछ **Aldermen (सदस्य)** होते थे।
- यह मुख्यतः **दीवानी (Civil) मामलों** की सुनवाई करती थी।
- यह **East India Company के अधीन** कार्य करती थी।
- इसके निर्णय के खिलाफ अपील **Governor-in-Council** में की जा सकती थी।

उद्देश्य:

- ब्रिटिश व्यापारियों और नागरिकों के विवादों को सुलझाना।

Supreme Court क्या है? **Supreme Court** की स्थापना **Regulating Act 1773** के तहत की गई।

👉 पहला Supreme Court: **Supreme Court of Calcutta**

मुख्य विशेषताएँ:

- इसमें एक **Chief Justice + 3 Judges** होते थे।
- यह **King's Court (Crown Court)** था, Company के अधीन नहीं।
- यह **दीवानी + फौजदारी (Civil + Criminal)** दोनों मामलों की सुनवाई करता था।
- इसका अधिकार क्षेत्र (jurisdiction) **ब्रिटिश नागरिकों और कुछ भारतीयों** तक था।
- इसके निर्णय के खिलाफ अपील **Privy Council (England)** में की जा सकती थी।

उद्देश्य:

- भारत में **ब्रिटिश कानून (English Law)** लागू करना और न्याय देना।

Mayor's Court vs Supreme Court (Difference)

आधार	**Mayor's Court**	**Supreme Court**
स्थापना	1726 (Charter)	1774 (Regulating Act 1773)
नियंत्रण	East India Company	British Crown
कार्यक्षेत्र	केवल दीवानी मामले	दीवानी + फौजदारी दोनों

आधार	**Mayor’s Court**	**Supreme Court**
संरचना	Mayor + Aldermen	Chief Justice + Judges
अपील	Governor-in-Council	Privy Council (England)
प्रकृति	सीमित और कमजोर	शक्तिशाली और स्वतंत्र

Mayor’s Court ब्रिटिश काल की प्रारंभिक दीवानी अदालत थी, जबकि Supreme Court एक **उच्च और शक्तिशाली न्यायालय** था जिसने भारत में अंग्रेज़ी न्याय प्रणाली को मजबूत किया। Supreme Court ने आगे चलकर आधुनिक न्यायपालिका की नींव रखी।

Inheritance (उत्तराधिकार) – Meaning & Law **Inheritance (उत्तराधिकार)** का अर्थ है—किसी व्यक्ति की मृत्यु के बाद उसकी **संपत्ति (property)** का उसके उत्तराधिकारियों (heirs) को हस्तांतरण।

यह मुख्य रूप से दो कानूनों में समझा जाता है:

- Hindu Succession Act 1956
- Indian Succession Act 1925

Types of Inheritance (उत्तराधिकार के प्रकार)

1. Testamentary Succession (वसीयत द्वारा)

- जब व्यक्ति **Will (वसीयत)** बनाकर संपत्ति बाँटता है।
- मृत्यु के बाद संपत्ति उसी के अनुसार बाँटी जाती है।

2. Intestate Succession (बिना वसीयत)

- जब व्यक्ति बिना वसीयत के मर जाता है।
- तब कानून के अनुसार संपत्ति का बंटवारा होता है।

Hindu Law में Inheritance 👉 लागू होता है: हिंदू, सिख, जैन, बौद्ध

Class I Heirs (प्रथम श्रेणी वारिस)

- पुत्र (Son)
- पुत्री (Daughter)
- विधवा (Widow)
- माता (Mother)

👉 सभी को **बराबर हिस्सा** मिलता है।

Class II Heirs (द्वितीय श्रेणी)

- पिता (Father)
- भाई, बहन
- अन्य रिश्तेदार

👉 Class I न होने पर ही इनको संपत्ति मिलती है।

Coparcenary (संयुक्त परिवार संपत्ति)

- Hindu Succession Amendment Act 2005 के बाद
  👉 **बेटी को भी बेटे के समान अधिकार** मिला।

Muslim Law में Inheritance

👉 मुख्य विशेषताएँ:

- कोई "class system" नहीं, बल्कि **fixed shares (निश्चित हिस्से)** होते हैं।
- पहले **funeral expenses और debts** चुकाए जाते हैं।
- फिर संपत्ति का बंटवारा होता है।
- पुरुष को सामान्यतः महिला से **दोगुना हिस्सा** मिलता है।

🔹 **Important Concepts**

1. Heir (वारिस)

जो व्यक्ति संपत्ति पाने का अधिकार रखता है।

2. Succession (उत्तराधिकार)

संपत्ति का हस्तांतरण।

3. Will (वसीयत)

व्यक्ति द्वारा जीवन में किया गया संपत्ति वितरण का लिखित दस्तावेज।

Inheritance कानून का उद्देश्य है कि किसी व्यक्ति की मृत्यु के बाद उसकी संपत्ति का **न्यायपूर्ण और कानूनी वितरण** हो। भारत में अलग-अलग धर्मों के लिए अलग कानून हैं, लेकिन सभी का लक्ष्य है—**समानता और न्याय** सुनिश्चित करना।

Goodwill (गुडविल) – Meaning **Goodwill** वह **अमूर्त संपत्ति** (**intangible asset)** है जो किसी व्यवसाय की **प्रतिष्ठा, ग्राहक-विश्वास, ब्रांड नाम, स्थान, प्रबंधन आदि** से उत्पन्न होती है और भविष्य में **अतिरिक्त लाभ** (**super profit)** दिलाती है।

प्रमुख Thinkers/Definitions (Literature)

1. Lord Eldon “Goodwill is the probability that the old customers will resort to the old place.”

👉 अर्थ: पुराने ग्राहक फिर से उसी व्यवसाय के पास आएँ—यही गुडविल है।

2. Lord Macnaghten (प्रसिद्ध केस: Commissioner of Inland Revenue v Muller & Co’s Margarine Ltd)

“Goodwill is the whole advantage of the reputation and connection of the firm.” 👉 अर्थ: फर्म की प्रतिष्ठा और संबंधों से मिलने वाला पूरा लाभ ही गुडविल है।

3. Spicer and Pegler “Goodwill is the benefit and advantage of good name, reputation and connection of a business.” 👉 अर्थ: अच्छे नाम और प्रतिष्ठा से मिलने वाला फायदा।

4. Guthrie “Goodwill is the present value of expected super profits.” 👉 अर्थ: भविष्य के अतिरिक्त लाभ का वर्तमान मूल्य ही गुडविल है।

5. J. O. Magee “Goodwill is the capitalised value of excess earnings.” 👉 अर्थ: सामान्य से अधिक कमाई का पूंजीकृत मूल्य।

Goodwill की विशेषताएँ

- यह **अमूर्त संपत्ति** है (दिखाई नहीं देती)।
- व्यवसाय की **प्रतिष्ठा पर आधारित** होती है।
- यह **खरीदी/बेची** जा सकती है।
- यह **super profit** से जुड़ी होती है।

Types of Goodwill

1. **Purchased Goodwill** – खरीदी गई गुडविल
2. **Self-generated Goodwill** – स्वयं उत्पन्न गुडविल

Goodwill किसी व्यवसाय की **छवि, ग्राहक संबंध और अतिरिक्त कमाई की क्षमता** का समग्र मूल्य है। विभिन्न विद्वानों ने इसे कभी **प्रतिष्ठा**, कभी **ग्राहक आकर्षण**, और कभी **super profit के वर्तमान मूल्य** के रूप में समझाया है।

*** ▧ Res Judicata – Section 11, CPC (दीवानी प्रक्रिया संहिता)

Res Judicata एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है जिसका अर्थ है— 👉 “एक ही विवाद को दोबारा नहीं उठाया जा सकता” यह सिद्धांत **Code of Civil Procedure 1908 की धारा 11** में दिया गया है।

Meaning (अर्थ) अगर किसी मामले (case) पर पहले ही **competent court (सक्षम न्यायालय)** द्वारा अंतिम निर्णय (final judgment) हो चुका है, तो वही मामला दोबारा किसी अदालत में नहीं चलाया जा सकता। 👉 Latin maxim: “*Res judicata pro veritate accipitur*” (निर्णीत बात को सत्य माना जाता है)

Section 11 CPC – Essentials (आवश्यक तत्व) Res Judicata लागू होने के लिए ये शर्तें जरूरी हैं:

   - **Same Parties (वही पक्षकार)** दोनों मामलों में पक्षकार समान होने चाहिए।
   - **Same Matter in Issue (वही विवाद)** जो मुद्दा पहले तय हो चुका है, वही मुद्दा फिर उठाया गया हो।
   - **Final Decision (अंतिम निर्णय)** पहले केस में final judgment दिया गया हो।
   - **Competent Court (सक्षम न्यायालय)** पहले फैसला देने वाली अदालत के पास अधिकार होना चाहिए।

2. **Same Title (उसी अधिकार में मुकदमा)**
   - पक्षकार उसी capacity (जैसे owner, heir) में हों।

Constructive Res Judicata (स्पष्टीकरण IV)

👉 जो मुद्दा पहले केस में उठाया जा सकता था लेकिन नहीं उठाया गया, उसे भी **decided माना जाएगा।**

Important Case Laws

1. Daryao v State of UP 👉 Supreme Court ने कहा कि Res Judicata का सिद्धांत **writ petitions** पर भी लागू होता है।

2. Satyadhyan Ghosal v Deorajin Debi 👉 Court ने कहा कि यह सिद्धांत **finality of litigation** के लिए जरूरी है।

3. Forward Construction Co v Prabhat Mandal 👉 Constructive Res Judicata को स्पष्ट किया गया।

उद्देश्य (Object)

- मुकदमों को बार-बार चलने से रोकना
- न्यायालय का समय बचाना
- पक्षकारों को बार-बार परेशान होने से बचाना
- निर्णय में **finality (अंतिमता)** लाना

Res Judicata vs Res Sub Judice

आधार	**Res Judicata**	**Res Sub Judice**
स्थिति	मामला पहले तय हो चुका	मामला पहले से लंबित है
धारा	Sec 11 CPC	Sec 10 CPC
उद्देश्य	दोबारा मुकदमा रोकना	समानांतर मुकदमा रोकना

Res Judicata (Sec 11 CPC) न्याय प्रणाली का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है, जो यह सुनिश्चित करता है कि एक बार तय विवाद को दोबारा न उठाया जाए। यह न्याय में **finality, certainty और efficiency** लाता है।

Sir Charles Gray (1829) – Supreme Court, Calcutta Sir Charles Gray ब्रिटिश भारत में एक महत्वपूर्ण न्यायाधीश थे, जिन्होंने **Supreme Court of Calcutta** में Chief Justice के रूप में कार्य किया।

1829 के समय उनकी भूमिका

- Sir Charles Gray 1825 से 1832 तक **Chief Justice** रहे।
- 1829 में वे कलकत्ता सुप्रीम कोर्ट के प्रमुख न्यायाधीश थे।
- उनके समय में अदालत ने **English Law** को भारत में लागू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

Judicial Contribution (न्यायिक योगदान)

1. **Rule of Law को मजबूत किया**
    - कानून के शासन (Rule of Law) को लागू करने पर जोर दिया।
2. **Supreme Court की शक्ति को बढ़ाया**
    - Court की authority को स्पष्ट और प्रभावी बनाया।
3. **न्यायिक प्रक्रिया में सुधार**
    - सुनवाई को अधिक व्यवस्थित और औपचारिक बनाया।
4. **British Legal Principles का प्रचार**
    - भारतीय न्याय प्रणाली में English legal system को मजबूत किया।

Historical Context (इतिहासिक पृष्ठभूमि)

- Supreme Court की स्थापना 1774 में हुई थी (Regulating Act 1773)।
- यह Court **British Crown के अधीन** था, Company से अलग।

- 1829 के समय यह Court भारत की सबसे शक्तिशाली अदालतों में से एक था।

Sir Charles Gray ने 1829 में Supreme Court, Calcutta के Chief Justice के रूप में कार्य करते हुए न्यायपालिका को मजबूत किया और English law के प्रभाव को बढ़ाया। उनके कार्यकाल ने भारत में आधुनिक न्यायिक प्रणाली के विकास में योगदान दिया।

** in 1859 civil code crpc

1898 crpc enforce.

east india company return in 1858 to England. after that british crown take charge for india continent. it happened after the revolution of mangal pandy.

on 16 August 1861 british crown pass Indian high court act.

first high court start in Calcutta on 14-5-1862

madras

Bombay

jurisdiction of high court up to 15 , 1/3 barister , 5 years ext.

**** question what is the punishment for contempt of court?**

answer

according to the law of 1971 contempt of court maximum of rs 2000/- or 6 months jail or both.

** how many union territory in india?

there are 8 union territory available.